# قرآن مجید

## लफ़्ज़ी तरजुमा

# اَمَّنْ خَلَقَ

## पारा - 20

eParah

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمَّنْ | خَلَقَ | السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضَ | وَاَنْزَلَ | لَكُمْ | مِّنَ السَّمَآءِ |
| या कौन है जिसने | पैदा किया | आसमानों | और ज़मीन को | और उसने उतारा | तुम्हारे लिए | आसमान से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَآءً ج | فَاَنْۢبَتْنَا | بِهٖ | حَدَآئِقَ | ذَاتَ بَهْجَةٍ ج | مَا | كَانَ | لَكُمْ |
| पानी | फिर उगाए हमने | साथ उसके | बाग़ात | रौनक़ वाले | ना | था | तुम्हारे लिए |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | تُنْۢبِتُوْا | شَجَرَهَا ط | ءَاِلٰهٌ | مَّعَ | اللّٰهِ ط | بَلْ | هُمْ | قَوْمٌ |
| कि | तुम उगा सको | दरख़्त उनके | क्या है कोई इलाह | साथ | अल्लाह के | बल्कि | वो | ऐसे लोग हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّعْدِلُوْنَ ﴿60﴾ ط | اَمَّنْ | جَعَلَ | الْاَرْضَ | قَرَارًا | وَّجَعَلَ | خِلٰلَهَآ |
| जो (अल्लाह के) बराबर क़रार देते हैं | या कौन है जिसने | बनाया | ज़मीन को | जाए क़रार | और उसने बनाया | दर्मियान उसके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْهٰرًا | وَّجَعَلَ | لَهَا | رَوَاسِيَ | وَجَعَلَ | بَيْنَ | الْبَحْرَيْنِ |
| नहरों को | और उसने बनाया | उसके लिए | पहाड़ों को | और उसने बनाया | दर्मियान | दो समुन्दरों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| حَاجِزًا ط | ءَاِلٰهٌ | مَّعَ | اللّٰهِ ط | بَلْ | اَكْثَرُهُمْ | لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿61﴾ ط | اَمَّنْ |
| एक पर्दा | क्या है कोई इलाह | साथ | अल्लाह के | बल्कि | अक्सर उनके | नहीं वो इल्म रखते | या कौन है जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُّجِيْبُ | الْمُضْطَرَّ | اِذَا | دَعَاهُ | وَيَكْشِفُ | السُّوْٓءَ | وَيَجْعَلُكُمْ |
| दुआ क़ुबूल करता है | बेक़रार की | जब | वो दुआ करता है उससे | और वो दूर करता है | तकलीफ़ | और वो बनाता है तुम्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خُلَفَآءَ | الْاَرْضِ ط | ءَاِلٰهٌ | مَّعَ | اللّٰهِ ط | قَلِيْلًا مَّا | تَذَكَّرُوْنَ ﴿62﴾ ط |
| जानशीन | ज़मीन के | क्या है कोई इलाह | साथ | अल्लाह के | कितना कम | तुम नसीहत पकड़ते हो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمَّنْ | يَّهْدِيْكُمْ | فِيْ ظُلُمٰتِ | الْبَرِّ | وَالْبَحْرِ | وَمَنْ | يُّرْسِلُ |
| या कौन है जो | राह दिखाता है तुम्हें | अंधेरों में | ख़ुश्की के | और समुन्दर के | और कौन है जो | भेजता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الرِّيٰحَ | بُشْرًا | بَيْنَ يَدَيْ | رَحْمَتِهٖ ط | ءَاِلٰهٌ | مَّعَ | اللّٰهِ ط |
| हवाओं को | बतौरे ख़ुशख़बरी | आगे-आगे | अपनी रहमत के | क्या है कोई इलाह | साथ | अल्लाह के |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعٰلَى | اللّٰهُ | عَمَّا | يُشْرِكُوْنَ ﴿63﴾ | اَمَّنْ | يَّبْدَؤُا | الْخَلْقَ | ثُمَّ |
| बुलंदतर है | अल्लाह | उससे जो | वो शरीक ठहराते है | या कौन है जो | इब्तिदा करता है | तख़लीक़ की | फिर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُعِيْدُهٗ | وَمَنْ | يَّرْزُقُكُمْ | مِّنَ السَّمَآءِ | وَالْاَرْضِ | ءَاِلٰهٌ |
| वो एआदा करेगा उसका | और कौन है जो | रिज़्क़ देता है तुम्हें | आसमान से | और ज़मीन से | क्या है कोई इलाह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّعَ | اللّٰهِ | قُلْ | هَاتُوْا | بُرْهَانَكُمْ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿64﴾ |
| साथ | अल्लाह के | कह दीजिए | लाओ | दलील अपनी | अगर | हो तुम | सच्चे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْ | لَّا يَعْلَمُ | مَنْ | فِي السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ | الْغَيْبَ | اِلَّا | اللّٰهُ |
| कह दीजिए | नहीं जानता | जो कोई | आसमानों में | और ज़मीन में है | ग़ैब को | सिवाए | अल्लाह के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | يَشْعُرُوْنَ | اَيَّانَ | يُبْعَثُوْنَ ﴿65﴾ | بَلِ | ادّٰرَكَ | عِلْمُهُمْ |
| और नहीं | वो शऊर रखते | कि कब | वो उठाए जाऐंगे | बल्कि | गुम हो गया | इल्म उनका |

ع 5 8 1

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْاٰخِرَةِ ۚ | بَلْ | هُمْ | فِيْ شَكٍّ | مِّنْهَا ۚ | بَلْ | هُمْ | مِّنْهَا | عَمُوْنَ ﴿66﴾ ع |
| आख़िरत के बारे में | बल्कि | वो | शक में हैं | उससे | बल्कि | वो | उससे | अंधे हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْٓا | ءَاِذَا | كُنَّا | تُرٰبًا | وَّاٰبَآؤُنَآ |
| और कहा | उन लोगों ने जिन्होंने | कुफ़्र किया | क्या जब | हो जाऐंगे हम | मिट्टी | और आबा ओ अजदाद हमारे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَئِنَّا | لَمُخْرَجُوْنَ ﴿67﴾ | لَقَدْ | وُعِدْنَا | هٰذَا | نَحْنُ | وَاٰبَآؤُنَا |
| क्या यक़ीनन हम | ज़रूर निकाले जाऐंगे | और अलबत्ता तहक़ीक़ | वादा किए गए हम | उसका | हम | और आबा ओ अजदाद हमारे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلُ ۙ | اِنْ | هٰذَآ | اِلَّآ | اَسَاطِيْرُ | الْاَوَّلِيْنَ ﴿68﴾ | قُلْ | سِيْرُوْا |
| इससे क़ब्ल | नहीं | ये | मगर | कहानियां हैं | पहलों की | कह दीजिए | चलो फिरो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْاَرْضِ | فَانْظُرُوْا | كَيْفَ | كَانَ | عَاقِبَةُ | الْمُجْرِمِيْنَ ﴿69﴾ | وَلَا |
| ज़मीन में | फिर देखो | किस तरह | हुआ | अंजाम | मुजरिमों का | और ना |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَحْزَنْ | عَلَيْهِمْ | وَلَا | تَكُنْ | فِىْ ضَيْقٍ | مِّمَّا | يَمْكُرُوْنَ ﴿70﴾ |
| आप ग़म कीजिए | उन पर | और ना | आप हों | तंगी में | उससे जो | वो चालें चल रहे हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَقُوْلُوْنَ | مَتٰى | هٰذَا | الْوَعْدُ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿71﴾ | قُلْ |
| और वो कहते हैं | कब होगा | ये | वादा | अगर | हो तुम | सच्चे | कह दीजिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَسٰٓى | اَنْ | يَّكُوْنَ | رَدِفَ | لَكُمْ | بَعْضُ | الَّذِىْ | تَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿72﴾ |
| उम्मीद है | कि | हो वो | पीछे आ लगे | तुम्हारे | बाज़/कुछ हिस्सा | वो जो | तुम जल्दी मांगते हो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنَّ | رَبَّكَ | لَذُوْ فَضْلٍ | عَلَى النَّاسِ | وَلٰكِنَّ | اَكْثَرَهُمْ |
| और बेशक | रब आपका | अलबत्ता फ़ज़्ल वाला है | लोगों पर | और लेकिन | अक्सर उनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾ | وَاِنَّ | رَبَّكَ | لَيَعْلَمُ | مَا | تُكِنُّ | صُدُوْرُهُمْ |
| नहीं वो शुक्र करते | और बेशक | रब आपका | अलबत्ता वो जानता है | जो कुछ | छुपाते हैं | सीने उनके |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | يُعْلِنُوْنَ ﴿74﴾ | وَمَا | مِنْ غَآئِبَةٍ | فِى السَّمَآءِ | وَالْاَرْضِ | اِلَّا |
| और जो कुछ | वो ज़ाहिर करते हैं | और नहीं | कोई ग़ायब होने वाली | आसमान में | और ज़मीन में | मगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِىْ كِتٰبٍ | مُّبِيْنٍ ﴿75﴾ | اِنَّ | هٰذَا | الْقُرْاٰنَ | يَقُصُّ | عَلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ |
| एक किताब में है | वाज़ेह | बेशक | ये | क़ुरआन | बयान करता है | बनी इस्राईल पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَكْثَرَ | الَّذِىْ | هُمْ | فِيْهِ | يَخْتَلِفُوْنَ ﴿76﴾ | وَاِنَّهٗ | لَهُدًى |
| अक्सर (बातें) | वो जो | वो | उनमें | वो इख़्तिलाफ़ करते हैं | और बेशक वो | अलबत्ता हिदायत है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّرَحْمَةٌ | لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿77﴾ | اِنَّ | رَبَّكَ | يَقْضِىْ | بَيْنَهُمْ | بِحُكْمِهٖ ج |
| और रहमत है | ईमान लाने वालों के लिए | बेशक | रब आपका | वो फ़ैसला करेगा | दर्मियान उनके | अपने हुक्म से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَهُوَ | الْعَزِيْزُ | الْعَلِيْمُ ﴿78﴾ لا ج | فَتَوَكَّلْ | عَلَى اللّٰهِ ط | اِنَّكَ | عَلَى الْحَقِّ |
| और वो | बहुत ज़बरदस्त है | ख़ूब इल्म वाला है | पस तवक्कल कीजिए | अल्लाह पर | बेशक आप | हक़ पर हैं |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الصُّمَّ | تُسْمِعُ | وَلَا | الْمَوْتٰى | لَا تُسْمِعُ | اِنَّكَ | الْمُبِيْنِ ﴿79﴾ |
| बहरों को | आप सुना सकते | और नहीं | मुर्दों को | नहीं आप सुना सकते | बेशक आप | वाज़ेह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعُمْيِ | بِهٰدِي | اَنْتَ | وَمَآ | مُدْبِرِيْنَ ﴿80﴾ | وَلَّوْا | اِذَا | الدُّعَآءَ |
| अंधों को | हिदायत देने वाले | आप | और नहीं | पीठ फेर कर | वो फिर जाएं | जब | पुकार |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَهُمْ | بِاٰيٰتِنَا | يُّؤْمِنُ | مَنْ | اِلَّا | تُسْمِعُ | اِنْ | عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ط |
| फिर वो | हमारी आयात पर | ईमान लाते हैं | उनको जो | मगर | आप सुना सकते | नहीं | उनकी गुमराही से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهُمْ | اَخْرَجْنَا | عَلَيْهِمْ | الْقَوْلُ | وَقَعَ | وَاِذَا | مُّسْلِمُوْنَ ﴿81﴾ |
| उनके लिए | निकालेंगे हम | उन पर | बात | वाक़ेअ हो जाएगी | और जब | फ़रमांबरदार हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَا | كَانُوْا | النَّاسَ | اَنَّ | تُكَلِّمُهُمْ لا | مِّنَ الْاَرْضِ | دَآبَّةً |
| हमारी आयात पर | थे वो | लोग | कि बेशक | जो कलाम करेगा उनसे | ज़मीन से | एक जानवर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّمَّنْ | فَوْجًا | مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ | نَحْشُرُ | وَيَوْمَ | لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿82﴾ ع |
| उनमें से जो | एक फ़ौज को | हर उम्मत में से | हम इकट्ठा करेंगे | और जिस दिन | ना वो यक़ीन रखते |

ع 16 6 2

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَآءُوْ | اِذَا | حَتّٰى | يُوْزَعُوْنَ ﴿83﴾ | فَهُمْ | بِاٰيٰتِنَا | يُّكَذِّبُ |
| वो आ जाएंगे | जब | यहां तक कि | वो गिरोहों में तक़सीम किए जाएंगे | तो वो | हमारी आयात को | झुठलाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عِلْمًا | بِهَا | تُحِيْطُوْا | وَلَمْ | بِاٰيٰتِيْ | اَكَذَّبْتُمْ | قَالَ |
| इल्म के ऐतबार से | उनका | तुमने एहाता किया था | हालांकि नहीं | मेरी आयात को | क्या झुठलाया तुमने | वो फरमाएगा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | عَلَيْهِمْ | الْقَوْلُ | وَوَقَعَ | تَعْمَلُوْنَ ﴿84﴾ | كُنْتُمْ | اَمَّاذَا |
| बवजह उसके जो | उन पर | बात | और वाक़ेअ हो जाएगी | तुम अमल करते | थे तुम | या क्या कुछ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّيْلَ | جَعَلْنَا | اَنَّا | يَرَوْا | اَلَمْ | لَا يَنْطِقُوْنَ ﴿85﴾ | فَهُمْ | ظَلَمُوْا |
| रात को | बनाया हमने | बेशक हम | उन्होंने देखा | क्या नहीं | ना वो बोल सकेंगे | तो वो | उन्होंने ज़ुल्म किया |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| لَاٰيٰتٍ | فِيْ ذٰلِكَ | اِنَّ | مُبْصِرًا ؕ | وَالنَّهَارَ | فِيْهِ | لِيَسْكُنُوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता निशानियां हैं | इसमें | बेशक | रोशन | और दिन को | उसमें | ताकि वो सुकून पाएं |

| مَنْ | فَفَزِعَ | فِي الصُّوْرِ | يُنْفَخُ | وَيَوْمَ | يُّؤْمِنُوْنَ ﴿86﴾ | لِّقَوْمٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कोई | तो घबरा जाएगा | सूर में | फूंका जाएगा | और जिस दिन | जो ईमान लाते हैं | उन लोगों के लिए |

| وَكُلٌّ | اللّٰهُ ؕ | شَآءَ | مَنْ | اِلَّا | فِي الْاَرْضِ | وَمَنْ | فِي السَّمٰوٰتِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सबके सब | अल्लाह | चाहे | जिसे | मगर | ज़मीन में है | और जो कोई | आसमानों में है |

| وَّهِيَ | جَامِدَةً | تَحْسَبُهَا | الْجِبَالَ | وَتَرَى | دٰخِرِيْنَ ﴿87﴾ | اَتَوْهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हालांकि वो | जामिद | आप समझते हैं उन्हें | पहाड़ों को | और आप देखते हैं | ज़लील होकर | आएंगे उसके पास |

| شَيْءٍ ؕ | كُلَّ | اَتْقَنَ | الَّذِيْٓ | اللّٰهِ | صُنْعَ | السَّحَابِ ؕ | مَرَّ | تَمُرُّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीज़ को | हर | मज़बूत बनाया | वो जिसने | अल्लाह की | कारीगरी/सनअत है | बादलों का | चलना | वो चलते हैं |

| بِالْحَسَنَةِ | جَآءَ | مَنْ | تَفْعَلُوْنَ ﴿88﴾ | بِمَا | خَبِيْرٌۢ | اِنَّهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नेकी को | लाएगा | जो कोई | तुम करते हो | उसकी जो | ख़ूब ख़बर रखने वाला है | बेशक वो |

| وَمَنْ | اٰمِنُوْنَ ﴿89﴾ | يَّوْمَئِذٍ | مِّنْ فَزَعٍ | وَهُمْ | مِّنْهَا ۚ | خَيْرٌ | فَلَهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कोई | अमन में होंगे | उस दिन | घबराहट से | और वो | उससे | बेहतर है | तो उसके लिए |

| تُجْزَوْنَ | هَلْ | فِي النَّارِ ؕ | وُجُوْهُهُمْ | فَكُبَّتْ | بِالسَّيِّئَةِ | جَآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम बदला दिए जाओगे | नहीं | आग में | चेहरे उनके | तो औंधे डाले जाएंगे | बुराई को | लाएगा |

| اَعْبُدَ | اَنْ | اُمِرْتُ | اِنَّمَآ | تَعْمَلُوْنَ ﴿90﴾ | كُنْتُمْ | مَا | اِلَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं इबादत करूं | कि | हुक्म दिया गया है मुझे | बेशक | तुम अमल करते | थे तुम | उसका जो | मगर |

| شَيْءٍ ؗ | كُلُّ | وَّلَهٗ | حَرَّمَهَا | الَّذِيْ | الْبَلْدَةِ | هٰذِهِ | رَبَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीज़ | हर | और उसी के लिए है | हराम ठहराया उसे | वो जिसने | शहर के | इस | रब की |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّاُمِرْتُ | اَنْ | اَكُوْنَ | مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿91﴾ | وَ اَنْ | اَتْلُوَا | الْقُرْاٰنَ ۚ |
| और हुक्म दिया गया है मुझे | कि | मैं हो जाऊं | फ़रमांबरदारों में से | और ये कि | मैं तिलावत करूं | क़ुरआन की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَمَنِ | اهْتَدٰى | فَاِنَّمَا | يَهْتَدِيْ | لِنَفْسِهٖ ۚ | وَمَنْ | ضَلَّ | فَقُلْ |
| तो जो कोई | हिदायत पा गया | तो बेशक | वो हिदायत पाएगा | अपने नफ़्स के लिए | और जो कोई | भटका | तो कह दीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّمَآ | اَنَا | مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿92﴾ | وَقُلِ | الْحَمْدُ | لِلّٰهِ | سَيُرِيْكُمْ |
| बेशक | मैं तो | डराने वालों में से हूं | कह दीजिए | सब तारीफ़ | अल्लाह के लिए है | अनक़रीब वो दिखाएगा तुम्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِهٖ | فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ | وَمَا | رَبُّكَ | بِغَافِلٍ | عَمَّا | تَعْمَلُوْنَ ﴿93﴾ ع |
| अपनी निशानियां | तो तुम पहचान लोगे उन्हें | और नहीं | रब आपका | ग़ाफ़िल | उससे जो | तुम अमल करते हो |

ع 7 11 3

## سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ 49 — 28

اٰيَاتُهَا: 88 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| طٰسٓمٓ ﴿1﴾ | تِلْكَ | اٰيٰتُ | الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾ | نَتْلُوْا | عَلَيْكَ |
| طٰسٓمٓ | ये | आयात हैं | वाज़ेह किताब की | हम पढ़ते हैं | आप पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ نَّبَاِ | مُوْسٰى | وَفِرْعَوْنَ | بِالْحَقِّ | لِقَوْمٍ | يُّؤْمِنُوْنَ ﴿3﴾ | اِنَّ |
| कुछ ख़बर | मूसा की | और फ़िरऔन की | साथ हक़ के | उन लोगों के लिए | जो ईमान लाते हैं | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِرْعَوْنَ | عَلَا | فِي الْاَرْضِ | وَجَعَلَ | اَهْلَهَا | شِيَعًا | يَّسْتَضْعِفُ |
| फ़िरऔन ने | सरकशी की | ज़मीन में | और उसने कर दिया | उसके रहने वालों को | कई गिरोह | उसने कमज़ोर कर रखा था |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| طَآئِفَةً | مِّنْهُمْ | يُذَبِّحُ | اَبْنَآءَهُمْ | وَيَسْتَحْيٖ | نِسَآءَهُمْ ؕ | اِنَّهٗ |
| एक गिरोह को | उनमें से | वो ज़िबह करता था | उनके बेटों को | और वो ज़िंदा छोड़ देता था | उनकी औरतों को | बेशक वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَانَ | مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿4﴾ | وَنُرِيْدُ | اَنْ | نَّمُنَّ | عَلَى الَّذِيْنَ |
| था वो | फ़साद करने वालों में से | और हम चाहते थे | कि | हम एहसान करें | उन पर जो |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اسْتُضْعِفُوْا | فِي الْاَرْضِ | وَنَجْعَلَهُمْ | اَئِمَّةً | وَّنَجْعَلَهُمُ |
| कमज़ोर बना दिए गए थे | ज़मीन में | और हम बनाएं उन्हें | इमाम/पेशवा | और हम बनाएं उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْوٰرِثِيْنَ ⑤ لا | وَنُمَكِّنَ | لَهُمْ | فِي الْاَرْضِ | وَنُرِيَ | فِرْعَوْنَ | وَهَامٰنَ |
| वारिस | और हम इक़्तिदार बख़्शें | उन्हें | ज़मीन में | और हम दिखा दें | फ़िरऔन को | और हामान को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَجُنُوْدَهُمَا | مِنْهُمْ | مَّا | كَانُوْا | يَحْذَرُوْنَ ⑥ | وَاَوْحَيْنَآ | اِلٰٓى |
| और उन दोनों के लश्करों को | उनसे | (वो चीज़) जिससे | थे वो | वो डरते | और वही की हमने | तरफ़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُمِّ مُوْسٰٓى | اَنْ | اَرْضِعِيْهِ ج | فَاِذَا | خِفْتِ | عَلَيْهِ | فَاَلْقِيْهِ | فِي الْيَمِّ |
| मूसा की मां के | कि | दूध पिलाओ उसे | फिर जब | ख़ौफ़ हो तुम्हें | उस पर | तो फिर डाल दो उसे | दरिया में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | تَخَافِيْ | وَلَا | تَحْزَنِيْ ج | اِنَّا | رَآدُّوْهُ | اِلَيْكِ | وَجَاعِلُوْهُ |
| और ना | तुम डरो | और ना | तुम ग़म करो | बेशक हम | लौटा देने वाले हैं उसे | तरफ़ तेरे | और बनाने वाले हैं उसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ⑦ | فَالْتَقَطَهٗٓ | اٰلُ فِرْعَوْنَ | لِيَكُوْنَ | لَهُمْ | عَدُوًّا |
| रसूलों में से | पस उठा लिया उसे | आले फ़िरऔन ने | ताकि वो हो | उनके लिए | दुश्मन |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّحَزَنًا ط | اِنَّ | فِرْعَوْنَ | وَهَامٰنَ | وَجُنُوْدَهُمَا | كَانُوْا | خٰطِـِٕيْنَ ⑧ |
| और ग़म (का मोजिब) | बेशक | फ़िरऔन | और हामान | और उन दोनों के लश्कर | थे वो | ख़ताकार |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَتِ | امْرَاَتُ | فِرْعَوْنَ | قُرَّتُ | عَيْنٍ | لِّيْ | وَلَكَ ط |
| और कहने लगी | बीवी | फ़िरऔन की | ठंडक | आंखों की | मेरे लिए | और तेरे लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا تَقْتُلُوْهُ صلے | عَسٰٓى | اَنْ | يَّنْفَعَنَآ | اَوْ | نَتَّخِذَهٗ | وَلَدًا | وَّهُمْ |
| ना तुम क़त्ल करो इसे | उम्मीद है | कि | वो नफ़ा देगा हमें | या | हम बना लेंगे इसे | बेटा | और वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَشْعُرُوْنَ ⑨ | وَاَصْبَحَ | فُؤَادُ | اُمِّ مُوْسٰى | فٰرِغًا ط | اِنْ | كَادَتْ |
| नहीं वो शऊर रखते थे | और हो गया | दिल | मूसा की मां का | ख़ाली | बेशक | क़रीब था |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَتُبْدِیْ | بِهٖ | لَوْلَآ | اَنْ | رَّبَطْنَا | عَلٰی قَلْبِهَا | لِتَكُوْنَ |
| कि वो ज़ाहिर कर देती | उसे | अगर ना होता | ये कि | मज़बूत कर दिया था हमने | उसके दिल को | ताकि वो हो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (10) | وَقَالَتْ | لِاُخْتِهٖ | قُصِّيْهِ | فَبَصُرَتْ | بِهٖ |
| ईमान लाने वालों में से | और वो कहने लगी | उसकी बहन से | पीछे जा उसके | फिर वो देखती रही | उसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَنْ جُنُبٍ | وَّهُمْ | لَا يَشْعُرُوْنَ (11) | وَحَرَّمْنَا | عَلَيْهِ | الْمَرَاضِعَ |
| दूर से | और वो | वो शऊर ना रखते थे | और हराम कर दीं हमने | उस पर | दूध पिलाने वालियां |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلُ | فَقَالَتْ | هَلْ | اَدُلُّكُمْ | عَلٰٓی اَهْلِ بَيْتٍ | يَّكْفُلُوْنَهٗ |
| इससे पहले | तो वो कहने लगी | क्या | मैं बताऊं तुम्हें | ऐसे घर वाले | जो किफ़ालत करेंगे उसकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكُمْ | وَهُمْ | لَهٗ | نٰصِحُوْنَ (12) | فَرَدَدْنٰهُ | اِلٰٓی اُمِّهٖ | كَیْ |
| तुम्हारे लिए | और वो | उसके लिए | ख़ैरख़्वाह हों | तो लौटा दिया हमने उसे | तरफ़ उसकी मां के | ताकि |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَقَرَّ | عَيْنُهَا | وَلَا | تَحْزَنَ | وَلِتَعْلَمَ | اَنَّ | وَعْدَ | اللّٰهِ | حَقٌّ |
| ठंडी हों | आंखें उसकी | और ना | वो ग़मगीन हो | और ताकि वो जान ले | यक़ीनन | वादा | अल्लाह का | सच्चा है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ركوع 1 13 4 | وَّلٰكِنَّ | اَكْثَرَهُمْ | لَا يَعْلَمُوْنَ (13) ع | وَلَمَّا | بَلَغَ | اَشُدَّهٗ | وَاسْتَوٰٓی |
| | और लेकिन | अक्सर उनके | नहीं वो जानते | और जब | वो पहुंचा | अपनी जवानी को | और वो तवाना हो गया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اٰتَيْنٰهُ | حُكْمًا | وَّعِلْمًا ط | وَكَذٰلِكَ | نَجْزِی | الْمُحْسِنِيْنَ (14) |
| अता की हमने उसे | हिक्मत | और इल्म | और इसी तरह | हम बदला देते हैं | एहसान करने वालों को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَدَخَلَ | الْمَدِيْنَةَ | عَلٰی حِيْنِ غَفْلَةٍ | مِّنْ اَهْلِهَا | فَوَجَدَ | فِيْهَا |
| और वो दाख़िल हुआ | शहर में | ग़फ़लत के वक़्त | उसके रहने वालों की | तो उसने पाया | उसमें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| رَجُلَيْنِ | يَقْتَتِلٰنِ ق | هٰذَا | مِنْ شِيْعَتِهٖ | وَهٰذَا | مِنْ عَدُوِّهٖ ج |
| दो मर्दों को | वो दोनों लड़ रहे थे | ये | उसके गिरोह में से था | और ये (दूसरा) | उसके दुश्मनों में से था |

AL HUDA INTE NATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاسْتَغَاثَهُ | الَّذِیْ | مِنْ شِیْعَتِهٖ | عَلَى الَّذِیْ | مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ | فَوَكَزَهٗ |
| पस मदद तलब की उससे | उसने जो | उसके गिरोह में से था | उसके ख़िलाफ़ | जो उसके दुश्मनों में से था | तो घूंसा मारा उसे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُوْسٰى | فَقَضٰى | عَلَيْهِ ۫ | قَالَ | هٰذَا | مِنْ عَمَلِ | الشَّيْطٰنِ ؕ | اِنَّهٗ |
| मूसा ने | तो पूरी कर दी | उस पर (ज़िंदगी) | बोला | ये | काम में से है | शैतान के | यक़ीनन वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَدُوٌّ | مُّضِلٌّ | مُّبِيْنٌ ⑮ | قَالَ | رَبِّ | اِنِّیْ | ظَلَمْتُ | نَفْسِیْ |
| दुश्मन है | गुमराह करने वाला है | खुल्लम-खुल्ला | कहा | ऐ मेरे रब | बेशक मैं | ज़ुल्म किया मैंने | अपनी जान पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاغْفِرْ لِیْ | فَغَفَرَ | لَهٗ ؕ | اِنَّهٗ | هُوَ | الْغَفُوْرُ | الرَّحِیْمُ ⑯ | قَالَ |
| पस बख़्श दे मुझे | तो उसने बख़्श दिया | उसे | बेशक वो | वो ही है | बहुत बख़्शने वाला | निहायत रहम करने वाला | कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبِّ | بِمَآ | اَنْعَمْتَ | عَلَیَّ | فَلَنْ | اَكُوْنَ | ظَهِیْرًا |
| ऐ मेरे रब | बवजह उसके जो | इनआम किया तूने | मुझ पर | तो हरगिज़ नहीं | मैं हूंगा | मददगार |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِّلْمُجْرِمِیْنَ ⑰ | فَاَصْبَحَ | فِی الْمَدِیْنَةِ | خَآئِفًا | یَّتَرَقَّبُ | فَاِذَا |
| मुजरिमों के लिए | तो उसने सुबह की | शहर में | डरते हुए | ख़ुफ़िया टोह लगाते हुए | फिर अचानक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِی | اسْتَنْصَرَهٗ | بِالْاَمْسِ | یَسْتَصْرِخُهٗ ؕ | قَالَ | لَهٗ | مُوْسٰۤى |
| वो शख़्स | जिसने मदद मांगी थी उससे | कल | वो फरियाद कर रहा था उससे | कहा | उसे | मूसा ने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّكَ | لَغَوِیٌّ | مُّبِیْنٌ ⑱ | فَلَمَّاۤ | اَنْ | اَرَادَ | اَنْ | یَّبْطِشَ |
| बेशक तू | अलबत्ता बहका हुआ है | खुल्लम-खुल्ला | तो जब | कि | उसने इरादा किया | कि | वो पकड़ ले |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالَّذِیْ | هُوَ | عَدُوٌّ | لَّهُمَا ۙ | قَالَ | یٰمُوْسٰۤى | اَتُرِیْدُ | اَنْ |
| उसे जो | वो | दुश्मन था | उन दोनों का | उसने कहा | ऐ मूसा | क्या तू चाहता है | कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَقْتُلَنِیْ | كَمَا | قَتَلْتَ | نَفْسًا | بِالْاَمْسِ ۚ | اِنْ | تُرِیْدُ | اِلَّاۤ |
| तू क़त्ल कर दे मुझे | जैसा कि | क़त्ल किया तूने | एक नफ़्स को | कल | नहीं | तू चाहता | मगर |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | تَكُوْنَ | جَبَّارًا | فِي الْاَرْضِ | وَمَا | تُرِيْدُ | اَنْ | تَكُوْنَ |
| कि | तू हो | ज़बरदस्ती करने वाला | ज़मीन में | और नहीं | तू चाहता | कि | तू हो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ⑲ | وَجَآءَ | رَجُلٌ | مِّنْ اَقْصَا | الْمَدِيْنَةِ | يَسْعٰى ۬ |
| इस्लाह करने वालों में से | और आया | एक शख़्स | आख़िरी किनारे से | शहर के | दौड़ता हुआ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | يٰمُوْسٰٓى | اِنَّ | الْمَلَاَ | يَاْتَمِرُوْنَ | بِكَ | لِيَقْتُلُوْكَ | فَاخْرُجْ |
| कहा | ऐ मूसा | बेशक | सरदार | वो मशवरा कर रहे हैं | तेरे बारे में | कि वो क़त्ल कर दें तुझे | पस निकल जा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنِّيْ | لَكَ | مِنَ النّٰصِحِيْنَ ⑳ | فَخَرَجَ | مِنْهَا | خَآئِفًا | يَّتَرَقَّبُ ۬ | |
| बेशक मैं | तेरे लिए | ख़ैरख़्वाहों में से हूं | तो वो निकला | उससे | डरते हुए | ख़ुफ़िया टोह लगाते हुए | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | رَبِّ | نَجِّنِيْ | مِنَ الْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ㉑ ع | وَلَمَّا | تَوَجَّهَ | |
| कहा | ऐ मेरे रब | निजात दे मुझे | उन लोगों से | जो ज़ालिम हैं | और जब | उसने रुख़ किया | |

ع 2 8 5

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تِلْقَآءَ | مَدْيَنَ | قَالَ | عَسٰى | رَبِّيْٓ | اَنْ | يَّهْدِيَنِيْ | سَوَآءَ |
| जानिब | मदयन के | कहा | उम्मीद है | मेरा रब | कि | वो दिखाएगा मुझे | सीधा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّبِيْلِ ㉒ | وَلَمَّا | وَرَدَ | مَآءَ | مَدْيَنَ | وَجَدَ | عَلَيْهِ | اُمَّةً |
| रास्ता | और जब | वो वारिद हुआ/पहुंचा | पानी पर | मदयन के | उसने पाया | उस पर | एक गिरोह को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ النَّاسِ | يَسْقُوْنَ ۫ | وَوَجَدَ | مِنْ دُوْنِهِمُ | امْرَاَتَيْنِ | تَذُوْدٰنِ ۚ |
| लोगों में से | वो पानी पिला रहे थे | और उसने पाया | उनके अलावा | दो औरतों को | वो दोनों हटाती थीं (मवेशी) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | مَا | خَطْبُكُمَا ؕ | قَالَتَا | لَا نَسْقِيْ | حَتّٰى | يُصْدِرَ |
| कहा | क्या | मामला है तुम दोनों का | वो दोनों कहने लगीं | नहीं हम पानी पिलातीं | यहां तक कि | वापस ले जाऐं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الرِّعَآءُ سكتة | وَاَبُوْنَا | شَيْخٌ | كَبِيْرٌ ㉓ | فَسَقٰى | لَهُمَا | ثُمَّ |
| चरवाहे (अपने मवेशी) | और बाप हमारा | बूढ़ा | बड़ी उम्र का है | तो उसने पानी पिलाया | उन दोनों के लिए | फिर |

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| إِلَىَّ | أَنزَلْتَ | لِمَآ | إِنِّى | رَبِّ | فَقَالَ | إِلَى ٱلظِّلِّ | تَوَلَّىٰٓ |
| मेरी तरफ़ | नाज़िल करे तू | उसके लिए जो | बेशक मैं | ऐ मेरे रब | फिर वो कहने लगा | तरफ़ साए के | वो पलट गया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى ٱسْتِحْيَآءٍ ز | تَمْشِى | إِحْدَىٰهُمَا | فَجَآءَتْهُ | فَقِيرٌ (24) | مِنْ خَيْرٍ |
| साथ हया के | चलती हुई | उन दोनों में से एक | तो आई उसके पास | मोहताज हूं | भलाई में से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سَقَيْتَ | مَا | أَجْرَ | لِيَجْزِيَكَ | يَدْعُوكَ | أَبِى | إِنَّ | قَالَتْ |
| पानी पिलाया तूने | उसकी जो | उजरत | ताकि वो बदले में दें तुम्हें | बुला रहे हैं तुम्हें | मेरे वालिद | बेशक | वो कहने लगी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا تَخَفْ قف وقفة | قَالَ | ٱلْقَصَصَ لا | عَلَيْهِ | وَقَصَّ | جَآءَهُۥ | فَلَمَّا | لَنَا ط |
| ना तुम डरो | उसने कहा | क़िस्सा | उस पर | और उसने बयान किया | वो आ गया उसके पास | तो जब | हमारे लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَٰٓأَبَتِ | إِحْدَىٰهُمَا | قَالَتْ | ٱلظَّٰلِمِينَ (25) | مِنَ ٱلْقَوْمِ | نَجَوْتَ |
| ऐ मेरे अब्बा जान | उन दोनों में से एक ने | कहा | जो ज़ालिम हैं | उन लोगों से | निजात पा गए हो तुम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ٱلْأَمِينُ (26) | ٱلْقَوِىُّ | ٱسْتَـْٔجَرْتَ | مَنِ | خَيْرَ | إِنَّ | ٱسْتَـْٔجِرْهُ ز |
| अमानतदार है | जो मज़बूत है | उजरत पर रखें आप | वो जिसे | बेहतरीन | बेशक | उजरत पर रख लीजिए उसे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هَٰتَيْنِ | ٱبْنَتَىَّ | إِحْدَى | أُنكِحَكَ | أَنْ | أُرِيدُ | إِنِّىٓ | قَالَ |
| इन दो | अपनी दोनों बेटियों में से | एक का | मैं निकाह कर दूं तुमसे | कि | मैं चाहता हूं | बेशक मैं | उसने कहा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَشْرًا | أَتْمَمْتَ | فَإِنْ | حِجَجٍ ج | ثَمَٰنِىَ | تَأْجُرَنِى | أَن | عَلَىٰٓ |
| दस (साल) | पूरे कर दो तुम | फिर अगर | साल | आठ | तुम मज़दूरी करो मेरी | कि | इस (शर्त) पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَتَجِدُنِىٓ | عَلَيْكَ ط | أَشُقَّ | أَنْ | أُرِيدُ | وَمَآ | فَمِنْ عِندِكَ ج |
| यक़ीनन तुम पाओगे मुझे | तुम पर | मैं मशक़्क़त डालूं | कि | मैं चाहता | और नहीं | तो तुम्हारी तरफ़ से है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَيْنِى | ذَٰلِكَ | قَالَ | مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ (27) | ٱللَّهُ | شَآءَ | إِن |
| दर्मियान मेरे | ये (बात तय) है | उसने कहा | नेक लोगों में से | अल्लाह ने | चाहा | अगर |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَبَيْنَكَ ط | اَيَّمَا | الْاَجَلَيْنِ | قَضَيْتُ | فَلَا | عُدْوَانَ | عَلَيَّ ط |
| और दर्मियान तुम्हारे | जो भी | दो मुद्दतों में से | मैं पूरी कर दूं | तो ना होगी | कोई ज़्यादती | मुझ पर |

ع 3 7 6

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاللّٰهُ | عَلٰى | مَا | نَقُوْلُ | وَكِيْلٌ (28) ع | فَلَمَّا | قَضٰى | مُوْسَى |
| और अल्लाह | ऊपर | उसके जो | हम कह रहे हैं | निगरान है | तो जब | पूरी की | मूसा ने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْاَجَلَ | وَسَارَ | بِاَهْلِهٖٓ | اٰنَسَ | مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ | نَارًا ج | قَالَ |
| मुक़र्रर मुद्दत | और वो ले चला | अपने घर वालों को | उसने देखी | तूर की जानिब से | एक आग | कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِاَهْلِهِ | امْكُثُوْٓا | اِنِّيْٓ | اٰنَسْتُ | نَارًا | لَّعَلِّيْٓ | اٰتِيْكُمْ |
| अपने घर वालों से | ठहर जाओ | बेशक मैं | देखी है मैंने | एक आग | शायद कि मैं | मैं लाऊं तुम्हारे पास |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْهَا | بِخَبَرٍ | اَوْ | جَذْوَةٍ | مِّنَ النَّارِ | لَعَلَّكُمْ | تَصْطَلُوْنَ (29) | فَلَمَّآ |
| उसमें से | कोई ख़बर | या | कोई अंगारा | आग से | ताकि तुम | तुम ताप सको | तो जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَتٰىهَا | نُوْدِيَ | مِنْ شَاطِئِ | الْوَادِ | الْاَيْمَنِ | فِي الْبُقْعَةِ |
| वो आया उसके पास | वो पुकारा गया | किनारे से | वादी के | दाऐं जानिब की | जगह में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُبٰرَكَةِ | مِنَ الشَّجَرَةِ | اَنْ | يّٰمُوْسٰٓى | اِنِّيْٓ | اَنَا | اللّٰهُ | رَبُّ |
| बरकत वाली | दरख़्त में से | कि | ऐ मूसा | बेशक मैं | मैं ही | अल्लाह हूं | रब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعٰلَمِيْنَ (30) لا | وَاَنْ | اَلْقِ | عَصَاكَ ط | فَلَمَّا | رَاٰهَا | تَهْتَزُّ |
| तमाम जहानों का | और ये कि | तू डाल दे | लाठी अपनी | तो जब | उसने देखा उसे | कि वो हिलती है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَاَنَّهَا | جَآنٌّ | وَّلّٰى | مُدْبِرًا | وَّلَمْ | يُعَقِّبْ ط | يٰمُوْسٰٓى | اَقْبِلْ |
| गोया कि वो | सांप है | वो फिर गया | पीठ फेर कर | और ना | वो पलटा | ऐ मूसा | आगे बढ़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | تَخَفْ قف | اِنَّكَ | مِنَ الْاٰمِنِيْنَ (31) | اُسْلُكْ | يَدَكَ | فِيْ جَيْبِكَ |
| और ना | तू डर | बेशक तू | अमन पाने वालों में से है | दाख़िल कर | हाथ अपना | अपने गिरेबान में |

AL HIDAYA INTE NATIONL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَخْرُجَ | بَيْضَآءَ | مِنْ غَيْرِ | سُوْٓءٍ | وَّاضْمُمْ | اِلَيْكَ | جَنَاحَكَ |
| वो निकलेगा | सफ़ेद/चमकता हुआ | बग़ैर किसी | मर्ज़/तकलीफ़ के | और मिला ले | अपनी तरफ़ | बाज़ू अपना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الرَّهْبِ | فَذٰنِكَ | بُرْهَانٰنِ | مِنْ رَّبِّكَ | اِلٰى فِرْعَوْنَ | وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ |
| ख़ौफ़ से (बचने के लिए) | तो ये दोनों | दो निशानियां हैं | तेरे रब की तरफ़ से | तरफ़ फ़िरऔन | और उसके सरदारों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّهُمْ | كَانُوْا | قَوْمًا | فٰسِقِيْنَ ﴿32﴾ | قَالَ | رَبِّ | اِنِّيْٓ | قَتَلْتُ |
| बेशक वो | हैं वो | लोग | फ़ासिक़ | कहा | ऐ मेरे रब | बेशक मैं | क़त्ल किया मैंने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْهُمْ | نَفْسًا | فَاَخَافُ | اَنْ | يَّقْتُلُوْنِ ﴿33﴾ | وَاَخِيْ | هٰرُوْنُ | هُوَ |
| उनमें से | एक शख़्स को | तो मैं डरता हूं | कि | वो क़त्ल कर डालेंगे मुझे | और मेरा भाई | हारून | वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَفْصَحُ | مِنِّيْ | لِسَانًا | فَاَرْسِلْهُ | مَعِيَ | رِدْاً | يُّصَدِّقُنِيْٓ |
| ज़्यादा फ़सीह है | मुझसे | ज़बान में | तो भेज दे उसे | मेरे साथ | मददगार के तौर पर | वो तस्दीक़ करे मेरी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنِّيْٓ | اَخَافُ | اَنْ | يُّكَذِّبُوْنِ ﴿34﴾ | قَالَ | سَنَشُدُّ | عَضُدَكَ |
| बेशक मैं | मैं डरता हूं | कि | वो झुठला देंगे मुझे | फ़रमाया | अनक़रीब हम मज़बूत कर देंगे | बाज़ू तेरा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَآ ۚ | اَنْتُمَا | وَمَنِ | اتَّبَعَكُمَا | الْغٰلِبُوْنَ ﴿35﴾ | فَلَمَّا | جَآءَهُمْ |
| साथ हमारी निशानियों के | तुम दोनों | और जो | पैरवी करे तुम दोनों की | ग़ालिब आने वाले हो | फिर जब | आया उनके पास |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَا | بَيِّنٰتٍ | قَالُوْا | مَا | هٰذَآ | اِلَّا | سِحْرٌ |
| साथ हमारी निशानियों के | खुली-खुली | उन्होंने कहा | नहीं | ये | मगर | एक जादू है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّوْسٰى | بِاٰيٰتِنَا | بَيِّنٰتٍ | قَالُوْا | مَا | هٰذَآ | اِلَّا | سِحْرٌ |
| मूसा | साथ हमारी निशानियों के | खुली-खुली | उन्होंने कहा | नहीं | ये | मगर | एक जादू है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّفْتَرًى | وَّمَا | سَمِعْنَا | بِهٰذَا | فِيْٓ اٰبَآئِنَا | الْاَوَّلِيْنَ ﴿36﴾ | وَقَالَ |
| बनावटी/गढ़ा हुआ | और नहीं | सुना हमने | इसके बारे में | अपने आबा ओ अजदाद में | जो पहले (गुज़रे) | और कहा |

معانقة 11

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُوْسٰى | رَبِّيْٓ | اَعْلَمُ | بِمَنْ | جَآءَ | بِالْهُدٰى | مِنْ عِنْدِهٖ | وَمَنْ |
| मूसा ने | मेरा रब | ज़्यादा जानता है | उसे जो | लाया है | हिदायत | उसके पास से | और उसे जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَكُوْنُ | لَهٗ | عَاقِبَةُ | الدَّارِ ؕ | اِنَّهٗ | لَا يُفْلِحُ | الظّٰلِمُوْنَ ﴿37﴾ |
| है | उसके लिए | (अच्छा) अंजाम | घर का (आख़िरत के) | बेशक वो | नहीं वो फ़लाह पाते | जो ज़ालिम हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَ | فِرْعَوْنُ | يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ | مَا | عَلِمْتُ | لَكُمْ | مِّنْ اِلٰهٍ |
| और कहा | फ़िरऔन ने | ऐ अहले दरबार | नहीं | जानता मैं | तुम्हारे लिए | कोई इलाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| غَيْرِيْ ۚ | فَاَوْقِدْ | لِيْ | يٰهَامٰنُ | عَلَى الطِّيْنِ | فَاجْعَلْ | لِّيْ |
| अपने सिवा | पस जलाओ (आग) | मेरे लिए | ऐ हामान | मिट्टी पर | फिर बनाओ | मेरे लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| صَرْحًا | لَّعَلِّيْٓ | اَطَّلِعُ | اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ | وَاِنِّيْ | لَاَظُنُّهٗ |
| एक बुलंद इमारत | शायद कि मैं | मैं झांकूं | तरफ़ मूसा के इलाह के | और बेशक मैं | अलबत्ता मैं समझता हूं उसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿38﴾ | وَاسْتَكْبَرَ | هُوَ | وَجُنُوْدُهٗ | فِي الْاَرْضِ | بِغَيْرِ |
| झूठों में से | और तकब्बुर किया | उसने | और उसके लश्करों ने | ज़मीन में | बग़ैर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْحَقِّ | وَظَنُّوْٓا | اَنَّهُمْ | اِلَيْنَا | لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿39﴾ | فَاَخَذْنٰهُ | وَجُنُوْدَهٗ |
| हक़ के | और वो समझते थे | बेशक वो | हमारी तरफ़ | ना वो लौटाए जाऐंगे | तो पकड़ लिया हमने उसे | और उसके लश्करों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَنَبَذْنٰهُمْ | فِي الْيَمِّ ۚ | فَانْظُرْ | كَيْفَ | كَانَ | عَاقِبَةُ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿40﴾ |
| फिर फेंक दिया हमने उन्हें | दरिया में | तो देखो | किस तरह | हुआ | अंजाम | ज़ालिमों का |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَجَعَلْنٰهُمْ | اَئِمَّةً | يَّدْعُوْنَ | اِلَى النَّارِ ۚ | وَيَوْمَ | الْقِيٰمَةِ |
| और बना दिया हमने उन्हें | इमाम/रहनुमा | जो बुलाते थे | तरफ़ आग के | और दिन | क़यामत के |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿41﴾ | وَاَتْبَعْنٰهُمْ | فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا | لَعْنَةً ۚ | وَيَوْمَ |
| ना वो मदद दिए जाऐंगे | और पीछे लगा दी हमने उनके | इस दुनिया में | लानत | और दिन |

ع 4 14 7

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْقِيٰمَةِ | هُمْ | مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿42﴾ ع | وَلَقَدْ | اٰتَيْنَا | مُوْسَى | الْكِتٰبَ |
| क़यामत के | वो | बदहाल लोगों में से होंगे | और अलबत्ता तहक़ीक | दी हमने | मूसा को | किताब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْۢ بَعْدِ | مَآ | اَهْلَكْنَا | الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى | بَصَآئِرَ | لِلنَّاسِ |
| उसके बाद कि | जो | हलाक कर दिया हमने | पहली उम्मतों को | खुले दलाइल थे | लोगों के लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَهُدًى | وَّرَحْمَةً | لَّعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿43﴾ | وَمَا | كُنْتَ |
| और हिदायत | और रहमत थी | ताकि वो | वो नसीहत पकड़ें | और ना | थे आप |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ | اِذْ | قَضَيْنَآ | اِلٰى مُوْسَى | الْاَمْرَ | وَمَا | كُنْتَ |
| मग़रिबी जानिब (तूर की) | जब | वही की हमने | तरफ़ मूसा के | हुक्म की | और ना | थे आप |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿44﴾ لا | وَلٰكِنَّآ | اَنْشَاْنَا | قُرُوْنًا | فَتَطَاوَلَ | عَلَيْهِمُ |
| हाज़िर होने वालों में से | और लेकिन हम | उठाईं हमने | उम्मतें | तो तवील हो गई | उन पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعُمُرُ ج | وَمَا | كُنْتَ | ثَاوِيًا | فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ | تَتْلُوْا | عَلَيْهِمْ |
| मुद्दत | और ना | थे आप | मुक़ीम | अहले मदयन में | कि आप पढ़ते | उन पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِنَا لا | وَلٰكِنَّا | كُنَّا | مُرْسِلِيْنَ ﴿45﴾ | وَمَا | كُنْتَ | بِجَانِبِ الطُّوْرِ |
| आयात हमारी | और लेकिन हम | थे हम ही | भेजने वाले | और ना | थे आप | तूर की जानिब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِذْ | نَادَيْنَا | وَلٰكِنْ | رَّحْمَةً | مِّنْ رَّبِّكَ | لِتُنْذِرَ | قَوْمًا |
| जब | पुकारा हमने (मूसा को) | और लेकिन | ये रहमत है | आपके रब की तरफ़ से | ताकि आप डराऐं | एक क़ौम को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَّآ | اَتٰىهُمْ | مِّنْ نَّذِيْرٍ | مِّنْ قَبْلِكَ | لَعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿46﴾ |
| नहीं | आया उनके पास | कोई डराने वाला | आपसे पहले | शायद कि वो | वो नसीहत पकड़ें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلَوْلَآ | اَنْ | تُصِيْبَهُمْ | مُّصِيْبَةٌ | بِمَا | قَدَّمَتْ | اَيْدِيْهِمْ |
| और अगर ना होता | ये कि | पहुंचती उन्हें | कोई मुसीबत | बवजह उसके जो | आगे भेजा | उनके हाथों ने |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَيَقُوْلُوْا | رَبَّنَا | لَوْلَآ | اَرْسَلْتَ | اِلَيْنَا | رَسُوْلًا | فَنَتَّبِعَ |
| तो वो कहते | ऐ हमारे रब | क्यों ना | भेजा तू ने | हमारी तरफ़ | कोई रसूल | तो हम पैरवी करते |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِكَ | وَنَكُوْنَ | مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿47﴾ | فَلَمَّا | جَآءَهُمُ | الْحَقُّ |
| तेरी आयात की | और हम हो जाते | ईमान लाने वालों में से | तो जब | पास आया उनके | हक़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ عِنْدِنَا | قَالُوْا | لَوْلَآ | اُوْتِيَ | مِثْلَ | مَآ | اُوْتِيَ | مُوْسٰى ؕ |
| हमारे पास से | उन्होंने कहा | क्यों ना | वो दिया गया | मानिंद | उसके जो | दिए गए | मूसा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوَلَمْ | يَكْفُرُوْا | بِمَآ | اُوْتِيَ | مُوْسٰى | مِنْ قَبْلُ ۚ | قَالُوْا |
| क्या भला नहीं | कुफ़्र किया उन्होंने | उसका जो | दिए गए | मूसा | इससे पहले | उन्होंने कहा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| سِحْرٰنِ | تَظٰهَرَا وقف قف | وَقَالُوْٓا | اِنَّا | بِكُلٍّ | كٰفِرُوْنَ ﴿48﴾ |
| दोनों जादू हैं | एक दूसरे की मदद करते हैं | और उन्होंने कहा | बेशक हम | हर एक के | इंकारी हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْ | فَاْتُوْا | بِكِتٰبٍ | مِّنْ عِنْدِ | اللّٰهِ | هُوَ | اَهْدٰى | مِنْهُمَآ |
| कह दीजिए | पस ले आओ | कोई किताब | पास से | अल्लाह के | वो | ज़्यादा हिदायत वाली हो | इन दोनों से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَتَّبِعْهُ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿49﴾ | فَاِنْ | لَّمْ | يَسْتَجِيْبُوْا |
| मैं पैरवी कर लूंगा उसकी | अगर | हो तुम | सच्चे | फिर अगर | ना | उन्होंने क़ुबूल की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكَ | فَاعْلَمْ | اَنَّمَا | يَتَّبِعُوْنَ | اَهْوَآءَهُمْ ؕ | وَمَنْ | اَضَلُّ |
| आपकी (बात) | तो जान लीजिए | बेशक | वो पैरवी कर रहे हैं | अपनी ख़्वाहिशात की | और कौन | ज़्यादा गुमराह है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِمَّنِ | اتَّبَعَ | هَوٰىهُ | بِغَيْرِ | هُدًى | مِّنَ اللّٰهِ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ |
| उससे जो | पैरवी करे | अपनी ख़्वाहिश की | बग़ैर | हिदायत के | अल्लाह की तरफ़ से | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَهْدِي | الْقَوْمَ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿50﴾ ع | وَلَقَدْ | وَصَّلْنَا | لَهُمُ | الْقَوْلَ |
| नहीं वो हिदायत देता | उन लोगों को | जो ज़ालिम हैं | और अलबत्ता तहक़ीक़ | पै दर पै भेजा हमने | उनके लिए | कलाम (अपना) |

ع 5 8 8

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿51﴾ | اَلَّذِيْنَ | اٰتَيْنٰهُمُ | الْكِتٰبَ | مِنْ قَبْلِهٖ |
| ताकि वो | वो नसीहत पकड़ें | वो लोग जो | दी हमने उन्हें | किताब | इससे पहले |

النصف

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هُمْ | بِهٖ | يُؤْمِنُوْنَ ﴿52﴾ | وَاِذَا | يُتْلٰى | عَلَيْهِمْ | قَالُوْٓا | اٰمَنَّا |
| वो | उस पर | वो ईमान लाते हैं | और जब | पढ़ा जाता है | उन पर (क़ुरआन) | वो कहते हैं | ईमान लाए हम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖٓ | اِنَّهُ | الْحَقُّ | مِنْ رَّبِّنَآ | اِنَّا | كُنَّا | مِنْ قَبْلِهٖ |
| उस पर | बेशक वो | हक़ है | हमारे रब की तरफ़ से | बेशक हम | थे हम | उससे पहले ही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُسْلِمِيْنَ ﴿53﴾ | اُولٰٓئِكَ | يُؤْتَوْنَ | اَجْرَهُمْ | مَّرَّتَيْنِ | بِمَا | صَبَرُوْا |
| फ़रमांबरदार | यही लोग हैं | जो दिए जाऐंगे | अजर अपना | दो बार | बवजह उसके जो | उन्होंने सब्र किया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَيَدْرَءُوْنَ | بِالْحَسَنَةِ | السَّيِّئَةَ | وَمِمَّا | رَزَقْنٰهُمْ | يُنْفِقُوْنَ ﴿54﴾ |
| और वो दूर करते हैं | साथ भलाई के | बुराई को | और उसमें से जो | रिज़्क़ दिया हमने उन्हें | वो ख़र्च करते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِذَا | سَمِعُوا | اللَّغْوَ | اَعْرَضُوْا | عَنْهُ | وَقَالُوْا | لَنَآ |
| और जब | वो सुनते हैं | बेहूदा बात को | वो ऐराज़ करते हैं | उस से | और वो कहते हैं | हमारे लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَعْمَالُنَا | وَلَكُمْ | اَعْمَالُكُمْ | سَلٰمٌ | عَلَيْكُمْ | لَا نَبْتَغِي |
| आमाल हमारे | और तुम्हारे लिए | आमाल तुम्हारे | सलाम हो | तुम पर | नहीं हम चाहते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلْجٰهِلِيْنَ ﴿55﴾ | اِنَّكَ | لَا تَهْدِيْ | مَنْ | اَحْبَبْتَ | وَلٰكِنَّ | اللّٰهَ |
| जाहिलों को | बेशक आप | नहीं आप हिदायत दे सकते | जिसे | पसंद करें आप | और लेकिन | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَهْدِيْ | مَنْ | يَّشَآءُ ۚ | وَهُوَ | اَعْلَمُ | بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿56﴾ | وَقَالُوْٓا |
| वो हिदायत देता है | जिसे | वो चाहता है | और वो | ख़ूब जानता है | हिदायत पाने वालों को | और उन्होंने कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنْ | نَّتَّبِعِ | الْهُدٰى | مَعَكَ | نُتَخَطَّفْ | مِنْ اَرْضِنَا ؕ | اَوَلَمْ |
| अगर | हम पैरवी करें | हिदायत की | आपके साथ | हम उचक लिए जाऐंगे | अपनी ज़मीन से | क्या भला नहीं |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نُمَكِّنۡ | لَّهُمۡ | حَرَمًا | اٰمِنًا | يُّجۡبٰٓى | اِلَيۡهِ | ثَمَرٰتُ | كُلِّ |
| हमने जगह दी | उन्हें | हरम | अमन वाले में | खिंचे चले आते हैं | तरफ़ उसके | फल | हर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| شَىۡءٍ | رِّزۡقًا | مِّنۡ لَّدُنَّا | وَلٰـكِنَّ | اَكۡثَرَهُمۡ | لَا يَعۡلَمُوۡنَ (57) | وَكَمۡ |
| चीज़ के | रिज़्क़ के तौर पर | हमारी तरफ़ से | और लेकिन | अक्सर उनके | नहीं वो इल्म रखते | और कितनी ही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَهۡلَكۡنَا | مِنۡ قَرۡيَةٍۢ | بَطِرَتۡ | مَعِيۡشَتَهَا ۚ | فَتِلۡكَ | مَسٰكِنُهُمۡ | لَمۡ |
| हलाक कीं हमने | बस्तियां | जो इतराती थीं | अपनी मईशत पर | तो ये | घर हैं उनके | नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُسۡكَنۡ | مِّنۡۢ بَعۡدِهِمۡ | اِلَّا | قَلِيۡلًا ؕ | وَكُنَّا | نَحۡنُ | الۡوٰرِثِيۡنَ (58) |
| वो बसाए गए | बाद उनके | मगर | बहुत थोड़े | और हैं हम | हम ही | वारिस |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | كَانَ | رَبُّكَ | مُهۡلِكَ | الۡقُرٰى | حَتّٰى | يَبۡعَثَ | فِىۡۤ اُمِّهَا |
| और नहीं | है | रब आपका | हलाक करने वाला | बस्तियों को | यहां तक कि | वो भेज दे | उनके मरकज़ में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَسُوۡلًا | يَّتۡلُوۡا | عَلَيۡهِمۡ | اٰيٰتِنَا ۚ | وَمَا | كُنَّا | مُهۡلِكِى | الۡقُرٰٓى |
| कोई रसूल | जो पढ़ता हो | उन पर | आयात हमारी | और नहीं | हैं हम | हलाक करने वाले | बस्तियों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | وَاَهۡلُهَا | ظٰلِمُوۡنَ (59) | وَمَاۤ | اُوۡتِيۡتُمۡ | مِّنۡ شَىۡءٍ | فَمَتَاعُ |
| मगर | इस हाल में कि रहने वाले उसके | ज़ालिम हों | और जो भी | दिए गए तुम | कोई चीज़ | पस सामान है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الۡحَيٰوةِ | الدُّنۡيَا | وَزِيۡنَتُهَا ۚ | وَمَا | عِنۡدَ | اللّٰهِ | خَيۡرٌ | وَّاَبۡقٰى ؕ |
| ज़िंदगी का | दुनिया की | और रौनक़ उसकी | और जो कुछ | पास है | अल्लाह के | बेहतर है | और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَفَلَا | تَعۡقِلُوۡنَ (60) ع | اَفَمَنۡ | وَّعَدۡنٰهُ | وَعۡدًا | حَسَنًا | فَهُوَ |
| क्या भला नहीं | तुम अक़्ल से काम लेते | क्या भला वो जो | वादा किया हमने उससे | वादा | अच्छा | फिर वो |

ع 6 10 9

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَاقِيۡهِ | كَمَنۡ | مَّتَّعۡنٰهُ | مَتَاعَ | الۡحَيٰوةِ | الدُّنۡيَا | ثُمَّ |
| पाने वाला है उसे | मानिंद उसके हो सकता है | सामान दिया हमने जिसे | सामान | ज़िंदगी का | दुनिया की | फिर |

AL HUDA INTE NATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هُوَ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ | مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿61﴾ | وَ يَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | فَيَقُوْلُ |
| वो | दिन | क़यामत के | हाज़िर किए जाने वालों में से होगा | और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | फिर वो फ़रमाएगा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَيْنَ | شُرَكَآءِيَ | الَّذِيْنَ | كُنْتُمْ | تَزْعُمُوْنَ ﴿62﴾ | قَالَ | الَّذِيْنَ |
| कहां हैं | शरीक मेरे | वो जिनका | थे तुम | तुम गुमान रखते | कहेंगे | वो लोग |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَقَّ | عَلَيْهِمُ | الْقَوْلُ | رَبَّنَا | هٰٓؤُلَآءِ | الَّذِيْنَ | اَغْوَيْنَا ۚ |
| सच हो गई | उन पर | बात | ऐ हमारे रब | ये हैं | वो लोग जिन्हें | गुमराह किया हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَغْوَيْنٰهُمْ | كَمَا | غَوَيْنَا ۚ | تَبَرَّاْنَآ | اِلَيْكَ ۫ | مَا | كَانُوْٓا |
| गुमराह किया था हमने उन्हें | जैसा कि | गुमराह हुए हम | इज़हारे बराअत करते हैं हम (उनसे) | तेरे सामने | ना | थे वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِيَّانَا | يَعْبُدُوْنَ ﴿63﴾ | وَ قِيْلَ | ادْعُوْا | شُرَكَآءَكُمْ | فَدَعَوْهُمْ |
| सिर्फ़ हमारी ही | वो इबादत करते | और कहा जाएगा | पुकारो | अपने शरीकों को | तो वो पुकारेंगे उन्हें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَمْ | يَسْتَجِيْبُوْا | لَهُمْ | وَ رَاَوُا | الْعَذَابَ ۚ | لَوْ | اَنَّهُمْ | كَانُوْا |
| फिर ना | वो जवाब देंगे | उन्हें | और वो देख लेंगे | अज़ाब को | काश | कि बेशक वो | होते वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَهْتَدُوْنَ ﴿64﴾ | وَ يَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | فَيَقُوْلُ | مَاذَآ | اَجَبْتُمْ |
| वो हिदायत पाते | और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | फिर वो कहेगा | क्या कुछ | जवाब दिया तुमने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمُرْسَلِيْنَ ﴿65﴾ | فَعَمِيَتْ | عَلَيْهِمُ | الْاَنْۢبَآءُ | يَوْمَئِذٍ | فَهُمْ |
| रसूलों को | तो अंधी हो जाऐंगी | उन पर | ख़बरें | उस दिन | तो वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿66﴾ | فَاَمَّا | مَنْ | تَابَ | وَ اٰمَنَ | وَ عَمِلَ | صَالِحًا |
| ना वो आपस में सवाल करेंगे | तो रहा | वो जिसने | तौबा की | और ईमान लाया | और उसने अमल किया | नेक |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَعَسٰٓى | اَنْ | يَّكُوْنَ | مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿67﴾ | وَ رَبُّكَ | يَخْلُقُ | مَا |
| तो उम्मीद है | कि | होगा वो | फ़लाह पाने वालों में से | और रब आपका | पैदा करता है | जो |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَشَآءُ | وَيَخْتَارُ ؕ | مَا | كَانَ | لَهُمُ | الْخِيَرَةُ ؕ | سُبْحٰنَ | اللّٰهِ |
| वो चाहता है | और वो मुंतख़िब कर लेता है | नहीं | है | उनके लिए | इख़्तियार | पाक है | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَعٰلٰى | عَمَّا | يُشْرِكُوْنَ ﴿68﴾ | وَرَبُّكَ | يَعْلَمُ | مَا | تُكِنُّ |
| और वो बुलंदतर है | उससे जो | वो शरीक ठहराते हैं | और रब आप का | वो जानता है | जो कुछ | छुपाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صُدُوْرُهُمْ | وَمَا | يُعْلِنُوْنَ ﴿69﴾ | وَهُوَ | اللّٰهُ | لَآ اِلٰهَ | اِلَّا |
| सीने उनके | और जो कुछ | वो ज़ाहिर करते हैं | और वो | अल्लाह है | नहीं कोई इलाह (बरहक़) | मगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هُوَ ؕ | لَهُ | الْحَمْدُ | فِي الْاُوْلٰى | وَالْاٰخِرَةِ ۫ | وَلَهُ | الْحُكْمُ |
| वो ही | उसी के लिए है | सब तारीफ़ | दुनिया में | और आख़िरत में | और उसी का | हुक्म है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِلَيْهِ | تُرْجَعُوْنَ ﴿70﴾ | قُلْ | اَرَءَيْتُمْ | اِنْ | جَعَلَ | اللّٰهُ | عَلَيْكُمُ |
| और उसी की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | कह दीजिए | क्या ग़ौर किया तुमने | अगर | कर दे | अल्लाह | तुम पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّيْلَ | سَرْمَدًا | اِلٰى يَوْمِ | الْقِيٰمَةِ | مَنْ | اِلٰهٌ | غَيْرُ | اللّٰهِ |
| रात | हमेशा/दाइमी | दिन तक | क़यामत के | कौन है | इलाह | सिवाए | अल्लाह के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَأْتِيْكُمْ | بِضِيَآءٍ ؕ | اَفَلَا | تَسْمَعُوْنَ ﴿71﴾ | قُلْ | اَرَءَيْتُمْ | اِنْ | |
| जो लाए तुम्हारे पास | कोई रोशनी | क्या भला नहीं | तुम सुनते | कह दीजिए | क्या ग़ौर किया तुमने | अगर | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| جَعَلَ | اللّٰهُ | عَلَيْكُمُ | النَّهَارَ | سَرْمَدًا | اِلٰى يَوْمِ | الْقِيٰمَةِ | مَنْ |
| कर दे | अल्लाह | तुम पर | दिन | हमेशा/दाइमी | दिन तक | क़यामत के | कौन |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلٰهٌ | غَيْرُ | اللّٰهِ | يَأْتِيْكُمْ | بِلَيْلٍ | تَسْكُنُوْنَ | فِيْهِ ؕ | اَفَلَا |
| इलाह है | सिवाय | अल्लाह के | जो लाएगा तुम्हारे पास | रात को | तुम सुकून पा सको | उसमें | क्या फिर नहीं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تُبْصِرُوْنَ ﴿72﴾ | وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ | جَعَلَ | لَكُمُ | الَّيْلَ | وَالنَّهَارَ |
| तुम देखते | और उसकी रहमत में से है | कि उसने बनाया | तुम्हारे लिए | रात | और दिन को |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِتَسْكُنُوْا | فِيْهِ | وَلِتَبْتَغُوْا | مِنْ فَضْلِهٖ | وَلَعَلَّكُمْ | تَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾ |
| ताकि तुम सुकून पाओ | इसमें | और ताकि तुम तलाश करो | उसके फ़ज़्ल में से | और ताकि तुम | तुम शुक्र अदा करो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | فَيَقُوْلُ | اَيْنَ | شُرَكَآءِيَ | الَّذِيْنَ | كُنْتُمْ |
| और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | तो वो फ़रमाएगा | कहां हैं | मेरे शरीक | वो जिनका | थे तुम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَزْعُمُوْنَ ﴿74﴾ | وَنَزَعْنَا | مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ | شَهِيْدًا | فَقُلْنَا | هَاتُوْا |
| तुम दावा करते | और निकाल लाऐंगे हम | हर उम्मत में से | एक गवाह | तो कहेंगे हम | लाओ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بُرْهَانَكُمْ | فَعَلِمُوْٓا | اَنَّ | الْحَقَّ | لِلّٰهِ | وَضَلَّ | عَنْهُمْ |
| दलील अपनी | तो वो जान लेंगे | बेशक | हक़ | अल्लाह ही के लिए है | और गुम हो जाऐंगे | उनसे |

ع 7 15 10

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّا | كَانُوْا | يَفْتَرُوْنَ ﴿75﴾ ع | اِنَّ | قَارُوْنَ | كَانَ | مِنْ قَوْمِ | مُوْسٰى |
| जो | थे वो | गढ़ा करते | बेशक | क़ारून | था वो | क़ौम से | मूसा की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَبَغٰى | عَلَيْهِمْ ۠ | وَاٰتَيْنٰهُ | مِنَ الْكُنُوْزِ | مَآ | اِنَّ | مَفَاتِحَهٗ |
| तो उसने सरकशी की | उन पर | और अता किया हमने उसे | ख़ज़ानों में से | इस क़द्र कि | बेशक | कुंजियां उसकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَتَنُوْٓاُ | بِالْعُصْبَةِ | اُولِي الْقُوَّةِ ۗ | اِذْ | قَالَ | لَهٗ | قَوْمُهٗ |
| अलबत्ता वो भारी होती थीं | एक जमाअत पर | क़ुव्वत वाली | जब | कहा | उसे | उसकी क़ौम ने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا تَفْرَحْ | اِنَّ | اللّٰهَ | لَا يُحِبُّ | الْفَرِحِيْنَ ﴿76﴾ | وَابْتَغِ | فِيْمَآ |
| ना तुम इतराओ | बेशक | अल्लाह | नहीं वो पसंद करता | इतराने वालों को | और तलाश करो | इसमें से जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰتٰىكَ | اللّٰهُ | الدَّارَ | الْاٰخِرَةَ | وَلَا | تَنْسَ | نَصِيْبَكَ | مِنَ الدُّنْيَا |
| दिया तुम्हें | अल्लाह ने | घर | आख़िरत का | और ना | तुम भूलो | हिस्सा अपना | दुनिया में से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَحْسِنْ | كَمَآ | اَحْسَنَ | اللّٰهُ | اِلَيْكَ | وَلَا | تَبْغِ | الْفَسَادَ |
| और एहसान करो | जैसा कि | एहसान किया | अल्लाह ने | तुम पर | और ना | तुम चाहो | फ़साद |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْاَرْضِ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | لَا يُحِبُّ | الْمُفْسِدِيْنَ ﴿77﴾ | قَالَ | اِنَّمَآ |
| ज़मीन में | बेशक | अल्लाह | नहीं वो पसंद करता | फ़साद करने वालों को | उसने कहा | बेशक |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُوْتِيْتُهٗ | عَلٰى عِلْمٍ | عِنْدِيْ ؕ | اَوَ لَمْ | يَعْلَمْ | اَنَّ | اللّٰهَ | قَدْ |
| दिया गया हूं मैं इसे | इल्म की बिना पर | जो मेरे पास है | क्या भला नहीं | उसने जाना | बेशक | अल्लाह ने | तहक़ीक़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَهْلَكَ | مِنْ قَبْلِهٖ | مِنَ الْقُرُوْنِ | مَنْ هُوَ | اَشَدُّ | مِنْهُ | قُوَّةً |
| उसने हलाक कर दिया | इससे पहले | कई उम्मतों को | वो जो | ज़्यादा सख़्त थीं | उससे | क़ुव्वत में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَّ اَكْثَرُ | جَمْعًا ؕ | وَلَا | يُسْـَٔلُ | عَنْ ذُنُوْبِهِمُ | الْمُجْرِمُوْنَ ﴿78﴾ |
| और अक्सर | जमीअत में | और नहीं | पूछे जाते | अपने गुनाहों के बारे में | मुजरिम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَخَرَجَ | عَلٰى قَوْمِهٖ | فِيْ زِيْنَتِهٖ ؕ | قَالَ | الَّذِيْنَ | يُرِيْدُوْنَ | الْحَيٰوةَ |
| तो वो निकला | अपनी क़ौम पर | अपनी ज़ीनत में | कहा | उन लोगों ने जो | चाहते थे | ज़िंदगी |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الدُّنْيَا | يٰلَيْتَ | لَنَا | مِثْلَ | مَآ | اُوْتِيَ | قَارُوْنُ ۙ | اِنَّهٗ |
| दुनिया की | ऐ काश कि होता | हमारे लिए | मानिंद | इसके जो | दिया गया | क़ारून | यक़ीनन वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَذُوْ حَظٍّ | عَظِيْمٍ ﴿79﴾ | وَ قَالَ | الَّذِيْنَ | اُوْتُوا | الْعِلْمَ | وَيْلَكُمْ |
| अलबत्ता क़िस्मत वाला है | बहुत बड़ी | और कहा | उन लोगों ने जो | दिए गए थे | इल्म | अफ़सोस तुम पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ثَوَابُ | اللّٰهِ | خَيْرٌ | لِّمَنْ | اٰمَنَ | وَعَمِلَ | صَالِحًا ۚ | وَلَا |
| सवाब | अल्लाह का | बेहतर है | उसके लिए जो | ईमान लाया | और उसने अमल किया | नेक | और नहीं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يُلَقّٰىهَآ | اِلَّا | الصّٰبِرُوْنَ ﴿80﴾ | فَخَسَفْنَا | بِهٖ | وَبِدَارِهِ | الْاَرْضَ ق | |
| पा सकते उसे | मगर | सब्र करने वाले | पस धंसा दिया हमने | उसे | और उसके घर को | ज़मीन में | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَمَا | كَانَ | لَهٗ | مِنْ فِئَةٍ | يَّنْصُرُوْنَهٗ | مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ ق |
| तो ना | था | उसके लिए | कोई गिरोह | जो मदद करता उसकी | सिवाए | अल्लाह के |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | كَانَ | مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿81﴾ | وَاَصْبَحَ | الَّذِيْنَ | تَمَنَّوْا |
| और ना | था वो | बदला लेने वालों में से | और सुबह की | उन लोगों ने जो | तमन्ना कर रहे थे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَكَانَهٗ | بِالْاَمْسِ | يَقُوْلُوْنَ | وَيْكَاَنَّ | اللّٰهَ | يَبْسُطُ | الرِّزْقَ |
| उसके मक़ाम की | कल तक | वो कह रहे थे | अफ़सोस,बेशक | अल्लाह | वो फैला देता है | रिज़्क़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِمَنْ | يَّشَآءُ | مِنْ عِبَادِهٖ | وَيَقْدِرُ ۚ | لَوْلَآ | اَنْ | مَّنَّ | اللّٰهُ |
| जिसके लिए | वो चाहता है | अपने बंदों में से | और वो तंग कर देता है | अगर ना होता | ये कि | एहसान करता | अल्लाह |

ع 8 7 11

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْنَا | لَخَسَفَ | بِنَا ؕ | وَيْكَاَنَّهٗ | لَا يُفْلِحُ | الْكٰفِرُوْنَ ﴿82﴾ ع | تِلْكَ |
| हम पर | अलबत्ता वो धंसा देता | हमें (भी) | अफ़सोस,बेशक वो | नहीं वो फ़लाह पाते | जो काफ़िर हैं | ये है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الدَّارُ | الْاٰخِرَةُ | نَجْعَلُهَا | لِلَّذِيْنَ | لَا يُرِيْدُوْنَ | عُلُوًّا | فِى الْاَرْضِ |
| घर | आख़िरत का | हम बनाते हैं उसे | उन के लिए जो | नहीं वो चाहते | बुलंदी | ज़मीन में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | فَسَادًا ؕ | وَالْعَاقِبَةُ | لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿83﴾ | مَنْ | جَآءَ | بِالْحَسَنَةِ |
| और ना | फ़साद | और अंजाम | मुत्तक़ी लोगों के लिए है | जो कोई | लाया | भलाई |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَهٗ | خَيْرٌ | مِّنْهَا ۚ | وَمَنْ | جَآءَ | بِالسَّيِّئَةِ | فَلَا | يُجْزَى |
| तो उसके लिए है | बेहतर | उससे | और जो कोई | लाया | बुराई | तो नहीं | वो बदला दिए जाऐंगे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | عَمِلُوا | السَّيِّاٰتِ | اِلَّا | مَا | كَانُوْا | يَعْمَلُوْنَ ﴿84﴾ | اِنَّ |
| जिन्होंने | अमल किए | बुरे | मगर | उसका जो | थे वो | वो अमल करते | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِىْ | فَرَضَ | عَلَيْكَ | الْقُرْاٰنَ | لَرَآدُّكَ | اِلٰى مَعَادٍ ؕ | قُلْ |
| वो जिसने | फ़र्ज़ किया | आप पर | क़ुरआन को | अलबत्ता फेर ले जाने वाला है आपको | तरफ़ लौटने की जगह के | कह दीजिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَّبِّىْٓ | اَعْلَمُ | مَنْ | جَآءَ | بِالْهُدٰى | وَمَنْ | هُوَ | فِىْ ضَلٰلٍ |
| मेरा रब | ख़ूब जानता है | उसे जो | लाया | हिदायत को | और उसे जो | हो वो | गुमराही में |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّبِيْنٍ ﴿85﴾ | وَمَا | كُنْتَ | تَرْجُوْٓا | اَنْ | يُّلْقٰٓى | اِلَيْكَ | الْكِتٰبُ |
| खुली | और ना | थे आप | आप उम्मीद रखते | कि | इल्क़ा की जाएगी | तरफ़ आपके | किताब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | رَحْمَةً | مِّنْ رَّبِّكَ | فَلَا تَكُوْنَنَّ | ظَهِيْرًا | لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿86﴾ |
| मगर | रहमत है | आपके रब की तरफ़ से | पस हरगिज़ ना हों आप | मददगार | काफ़िरों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | يَصُدُّنَّكَ | عَنْ اٰيٰتِ | اللّٰهِ | بَعْدَ | اِذْ | اُنْزِلَتْ | اِلَيْكَ |
| और ना | वो हरगिज़ रोकें आपको | आयात से | अल्लाह की | बाद इसके कि | जब | वो नाज़िल की गईं | आपकी तरफ़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَادْعُ | اِلٰى رَبِّكَ | وَلَا تَكُوْنَنَّ | مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿87﴾ ج | وَلَا | تَدْعُ |
| और दावत दीजिए | अपने रब की तरफ़ | और हरगिज़ ना हों आप | मुशरिकों में से | और ना | आप पुकारिए |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَعَ | اللّٰهِ | اِلٰهًا | اٰخَرَ م | لَآ اِلٰهَ | اِلَّا | هُوَ قف | كُلُّ | شَيْءٍ |
| साथ | अल्लाह के | कोई इलाह | दूसरा | नहीं कोई इलाह (बरहक़) | मगर | वो ही | हर | चीज़ |

وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هَالِكٌ | اِلَّا | وَجْهَهٗ ط | لَهُ | الْحُكْمُ | وَاِلَيْهِ | تُرْجَعُوْنَ ﴿88﴾ ع |
| हलाक होने वाली है | सिवाय | उसके चेहरे के | उसी के लिए है | हुक्म | और उसी की तरफ़ | तुम पलटाए जाओगे |

ع 6 12 الثلثة

## اٰيَاتُهَا: 69 — 29 سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ 85 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الٓمّٓ ﴿1﴾ ج | اَحَسِبَ | النَّاسُ | اَنْ | يُّتْرَكُوْٓا | اَنْ | يَّقُوْلُوْٓا | اٰمَنَّا |
| الٓمّٓ | क्या समझ लिया है | लोगों ने | कि | वो छोड़ दिए जाएँगे | ये कि | वो कह दें | ईमान लाए हम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَهُمْ | لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿2﴾ | وَلَقَدْ | فَتَنَّا | الَّذِيْنَ | مِنْ قَبْلِهِمْ |
| और वो | ना वो आज़माए जाएँगे | और अलबत्ता तहक़ीक़ | आज़माया हमने | उनको जो | इनसे पहले थे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَلَيَعْلَمَنَّ | اللّٰهُ | الَّذِيْنَ | صَدَقُوْا | وَلَيَعْلَمَنَّ | الْكٰذِبِيْنَ ﴿3﴾ |
| पस अलबत्ता ज़रूर जान लेगा | अल्लाह | उन लोगों को जिन्होंने | सच कहा | और अलबत्ता वो ज़रूर जान लेगा | झूठों को |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمْ | حَسِبَ | الَّذِيْنَ | يَعْمَلُوْنَ | السَّيِّاٰتِ | اَنْ | يَّسْبِقُوْنَا ؕ |
| या | समझ लिया | उन लोगों ने जो | अमल करते हैं | बुरे | कि | वो सबक़त ले जाऐंगे हम पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| سَآءَ | مَا | يَحْكُمُوْنَ ④ | مَنْ | كَانَ | يَرْجُوْا | لِقَآءَ اللّٰهِ | فَاِنَّ |
| कितना बुरा है | जो | वो फ़ैसला कर रहे हैं | जो कोई | हो | उम्मीद रखता | अल्लाह से मुलाक़ात की | तो बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَجَلَ | اللّٰهِ | لَاٰتٍ ؕ | وَهُوَ | السَّمِيْعُ | الْعَلِيْمُ ⑤ | وَمَنْ |
| मुक़र्ररह वक़्त | अल्लाह का | अलबत्ता आने वाला है | और वो | ख़ूब सुनने वाला है | ख़ूब जानने वाला है | और जो कोई |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَاهَدَ | فَاِنَّمَا | يُجَاهِدُ | لِنَفْسِهٖ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ | لَغَنِيٌّ |
| जिहाद करे | तो बेशक | वो जिहाद करता है | अपने नफ़्स के लिए | बेशक | अल्लाह | अलबत्ता बहुत बेनियाज़ है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ⑥ | وَالَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ | لَنُكَفِّرَنَّ |
| तमाम जहान वालों से | और वो जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक | अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَنْهُمْ | سَيِّاٰتِهِمْ | وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ | اَحْسَنَ | الَّذِيْ | كَانُوْا |
| उनसे | बुराईयां उनकी | और अलबत्ता हम ज़रूर बदला देंगे उन्हें | बेहतरीन | उसका जो | थे वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَعْمَلُوْنَ ⑦ | وَوَصَّيْنَا | الْاِنْسَانَ | بِوَالِدَيْهِ | حُسْنًا ؕ | وَاِنْ |
| वो अमल करते | और ताकीद की हमने | इंसान को | अपने वालिदैन के साथ | भलाई (करने) की | और अगर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| جَاهَدٰكَ | لِتُشْرِكَ | بِيْ | مَا | لَيْسَ | لَكَ | بِهٖ | عِلْمٌ |
| वो दोनों ज़ोर डालें तुम पर | ताकि तुम शरीक करो | मेरे साथ | उसको जो | नहीं है | तुम्हें | जिसका | कोई इल्म |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَا | تُطِعْهُمَا ؕ | اِلَيَّ | مَرْجِعُكُمْ | فَاُنَبِّئُكُمْ | بِمَا | كُنْتُمْ |
| तो ना | तुम इताअत करो उन दोनों की | मेरी ही तरफ़ | लौटना है तुम्हारा | तो मैं बताऊंगा तुम्हें | वो जो | थे तुम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَعْمَلُوْنَ ⑧ | وَالَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَعَمِلُوا | الصّٰلِحٰتِ | لَنُدْخِلَنَّهُمْ |
| तुम अमल किया करते | और वो जो | ईमान लाए | और उन्होंने अमल किए | नेक | अलबत्ता हम ज़रूर दाख़िल करेंगे उन्हें |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِذَآ | بِاللّٰهِ | اٰمَنَّا | يَّقُوْلُ | مَنْ | وَمِنَ النَّاسِ | فِي الصّٰلِحِيْنَ ⑨ |
| फिर जब | अल्लाह पर | ईमान लाए हम | कहता है | जो | और लोगों में से कोई है | नेक लोगों में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَعَذَابِ اللّٰهِ ط | النَّاسِ | فِتْنَةَ | جَعَلَ | فِي اللّٰهِ | اُوْذِيَ |
| अल्लाह के अज़ाब की तरह | लोगों की | आज़माइश को | वो बना लेता है | अल्लाह (की राह) में | वो अज़ीयत दिया जाता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُنَّا | اِنَّا | لَيَقُوْلُنَّ | مِّنْ رَّبِّكَ | نَصْرٌ | جَآءَ | وَلَئِنْ |
| थे हम | बेशक हम | अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे | आपके रब की तरफ़ से | मदद | आ गई | और अलबत्ता अगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعٰلَمِيْنَ ⑩ | فِيْ صُدُوْرِ | بِمَا | بِاَعْلَمَ | اللّٰهُ | اَوَلَيْسَ | مَعَكُمْ ط |
| तमाम जहान वालों के | सीनों में है | उसे जो | ख़ूब जानता | अल्लाह | क्या भला नहीं | साथ तुम्हारे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمُنٰفِقِيْنَ ⑪ | وَلَيَعْلَمَنَّ | اٰمَنُوْا | الَّذِيْنَ | اللّٰهُ | وَلَيَعْلَمَنَّ |
| मुनाफ़िक़ों को | और अलबत्ता वो ज़रूर जान लेगा | ईमान लाए | उनको जो | अल्लाह | और अलबत्ता ज़रूर जान लेगा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| سَبِيْلَنَا | اتَّبِعُوْا | اٰمَنُوْا | لِلَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | الَّذِيْنَ | وَقَالَ |
| हमारे रास्ते की | पैरवी करो | ईमान लाए | उन लोगों से जो | कुफ़्र किया | उन लोगों ने जिन्होंने | और कहा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ خَطٰيٰهُمْ | بِحٰمِلِيْنَ | هُمْ | وَمَا | خَطٰيٰكُمْ ط | وَلْنَحْمِلْ |
| उनकी ख़ताओं में से | उठाने वाले | वो | हालांकि नहीं | ख़ताऐं तुम्हारी | और हम ज़रूर उठा लेंगे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاَثْقَالًا | اَثْقَالَهُمْ | وَلَيَحْمِلُنَّ | لَكٰذِبُوْنَ ⑫ | اِنَّهُمْ | مِّنْ شَيْءٍ ط |
| और कई बोझ | बोझ अपने | और अलबत्ता वो ज़रूर उठाऐंगे | अलबत्ता झूठे हैं | बेशक वो | कोई चीज़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَانُوْا | عَمَّا | الْقِيٰمَةِ | يَوْمَ | وَلَيُسْـَٔلُنَّ | اَثْقَالِهِمْ ز | مَّعَ |
| थे वो | उस चीज़ के बारे में जो | क़यामत के | दिन | और अलबत्ता वो ज़रूर पूछे जाऐंगे | अपने बोझों के | साथ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهِمْ | فَلَبِثَ | اِلٰى قَوْمِهٖ | نُوْحًا | اَرْسَلْنَا | وَلَقَدْ | يَفْتَرُوْنَ ⑬ ع |
| उनमें | तो वो रहा | तरफ़ उसकी क़ौम के | नूह को | भेजा हमने | और अलबत्ता तहक़ीक़ | वो गढ़ा करते |

ع 1 13 13

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلْفَ | سَنَةٍ | اِلَّا | خَمْسِيْنَ | عَامًا ؕ | فَاَخَذَهُمُ | الطُّوْفَانُ | وَهُمْ |
| एक हज़ार | साल | मगर | पचास | साल (कम) | तो पकड़ लिया उन्हें | तूफ़ान ने | जब कि वो |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ظٰلِمُوْنَ ﴿14﴾ | فَاَنْجَيْنٰهُ | وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ | وَجَعَلْنٰهَآ | اٰيَةً |
| ज़ालिम थे | तो निजात दी हमने उसे | और कश्ती वालों को | और बना दिया हमने उसे | एक निशानी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿15﴾ | وَاِبْرٰهِيْمَ | اِذْ | قَالَ | لِقَوْمِهِ | اعْبُدُوا | اللّٰهَ |
| तमाम जहान वालों के लिए | और इब्राहीम को | जब | उसने कहा | अपनी क़ौम से | इबादत करो | अल्लाह की |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاتَّقُوْهُ ؕ | ذٰلِكُمْ | خَيْرٌ | لَّكُمْ | اِنْ | كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ﴿16﴾ | اِنَّمَا |
| और डरो उससे | ये | बेहतर है | तुम्हारे लिए | अगर | हो तुम | तुम जानते | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعْبُدُوْنَ | مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | اَوْثَانًا | وَّتَخْلُقُوْنَ | اِفْكًا ؕ | اِنَّ |
| तुम इबादत करते हो | सिवाए | अल्लाह के | कुछ बुतों की | और तुम गढ़ते हो | झूठ | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | تَعْبُدُوْنَ | مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | لَا يَمْلِكُوْنَ | لَكُمْ | رِزْقًا |
| वो जिन की | तुम इबादत करते हो | सिवाए | अल्लाह के | नहीं वो मालिक हो सकते | तुम्हारे लिए | रिज़्क़ के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَابْتَغُوْا | عِنْدَ اللّٰهِ | الرِّزْقَ | وَاعْبُدُوْهُ | وَاشْكُرُوْا | لَهٗ ؕ | اِلَيْهِ |
| पस तलाश करो | अल्लाह के पास | रिज़्क़ | और इबादत करो उसकी | और शुक्र अदा करो | उसका | तरफ़ उसी के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُرْجَعُوْنَ ﴿17﴾ | وَاِنْ | تُكَذِّبُوْا | فَقَدْ | كَذَّبَ | اُمَمٌ | مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ |
| तुम लौटाए जाओगे | और अगर | तुम झुठलाते हो | पस तहक़ीक़ | झुठलाया | उम्मतों ने | जो तुम से पहले थीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | عَلَى الرَّسُوْلِ | اِلَّا | الْبَلٰغُ | الْمُبِيْنُ ﴿18﴾ | اَوَلَمْ | يَرَوْا |
| और नहीं | रसूल पर | मगर | पहुंचा देना | वाज़ेह तौर पर | क्या भला नहीं | उन्होंने देखा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ | يُبْدِئُ | اللّٰهُ | الْخَلْقَ | ثُمَّ | يُعِيْدُهٗ ؕ | اِنَّ | ذٰلِكَ |
| किस तरह | इब्तिदा करता है | अल्लाह | मख़लूक़ की | फिर | फिर वो एआदा करेगा उसका | बेशक | ये |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| عَلَى اللّٰهِ | يَسِيْرٌ (19) | قُلْ | سِيْرُوْا | فِى الْاَرْضِ | فَانْظُرُوْا | كَيْفَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह पर | बहुत आसान है | कह दीजिए | चलो फिरो | ज़मीन में | फिर दखो | किस तरह |

| بَدَاَ | الْخَلْقَ | ثُمَّ | اللّٰهُ | يُنْشِئُ | النَّشْاَةَ | الْاٰخِرَةَ ط | اِنَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उसने इब्तिदा की | मख़लूक़ की | फिर | अल्लाह | वो उठाएगा | उठाना | आखिरी बार | बेशक |

| اللّٰهَ | عَلٰى | كُلِّ | شَىْءٍ | قَدِيْرٌ (20) ج | يُعَذِّبُ | مَنْ | يَّشَآءُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह | ऊपर | हर | चीज़ के | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | वो अज़ाब देता है | जिसे | वो चाहता है |

| وَيَرْحَمُ | مَنْ | يَّشَآءُ ج | وَاِلَيْهِ | تُقْلَبُوْنَ (21) | وَمَآ | اَنْتُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और वो रहम करता है | जिस पर | वो चाहता है | और उसी की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | और नहीं | तुम |

| بِمُعْجِزِيْنَ | فِى الْاَرْضِ | وَلَا | فِى السَّمَآءِ ز | وَمَا | لَكُمْ | مِّنْ دُوْنِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आजिज़ करने वाले | ज़मीन में | और ना | आसमान में | और नहीं | तुम्हारे लिए | सिवाए |

| اللّٰهِ | مِنْ وَّلِيٍّ | وَّلَا | نَصِيْرٍ (22) ع | وَالَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | بِاٰيٰتِ اللّٰهِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अल्लाह के | कोई दोस्त | और ना | कोई मददगार | और वो जिन्होंने | कुफ़्र किया | अल्लाह की आयात का |

ع 2 9 14

| وَلِقَآئِهٖ | اُولٰٓئِكَ | يَئِسُوْا | مِنْ رَّحْمَتِيْ | وَاُولٰٓئِكَ | لَهُمْ | عَذَابٌ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और उसकी मुलाक़ात का | यही लोग हैं | जो मायूस हो गए | मेरी रहमत से | और यही लोग हैं | उनके लिए | अज़ाब है |

| اَلِيْمٌ (23) | فَمَا | كَانَ | جَوَابَ | قَوْمِهٖٓ | اِلَّآ | اَنْ | قَالُوا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दर्दनाक | तो ना | था | जवाब | उसकी क़ौम का | मगर | ये कि | उन्होंने कहा |

| اقْتُلُوْهُ | اَوْ | حَرِّقُوْهُ | فَاَنْجٰىهُ | اللّٰهُ | مِنَ النَّارِ ط | اِنَّ | فِىْ ذٰلِكَ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क़त्ल कर दो उसे | या | जला डालो उसे | तो निजात दी उसे | अल्लाह ने | आग से | बेशक | इसमें |

| لَاٰيٰتٍ | لِّقَوْمٍ | يُّؤْمِنُوْنَ (24) | وَقَالَ | اِنَّمَا | اتَّخَذْتُمْ |
|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता निशानियां हैं | उन लोगों के लिए | जो ईमान लाते हैं | और उसने कहा | बेशक | बना लिया तुमने |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| الدُّنْيَا ۚ | فِي الْحَيٰوةِ | بَيْنِكُمْ | مَّوَدَّةَ | اَوْثَانًا ۙ | اللّٰهِ | مِّنْ دُوْنِ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की | ज़िंदगी में | आपस में | मोहब्बत का ज़रिया | बुतों को | अल्लाह के | सिवाए |

| وَّيَلْعَنُ | بِبَعْضٍ | بَعْضُكُمْ | يَكْفُرُ | الْقِيٰمَةِ | يَوْمَ | ثُمَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और लाअनत करेगा | बाज़ का | बाज़ तुम्हारा | इंकार करेगा | क़यामत के | दिन | फिर |

| مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿25﴾ ۖ | لَكُمْ | وَمَا | النَّارُ | وَّمَاْوٰىكُمُ | بَعْضًا ۡ | بَعْضُكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| कोई मददगार | तुम्हारे लिए | और नहीं | आग है | और ठिकाना तुम्हारा | बाज़ को | बाज़ तुम्हारा |

| اِلٰى رَبِّيْ ؕ | مُهَاجِرٌ | اِنِّيْ | وَقَالَ | لُوْطٌ ۘ | لَهٗ | فَاٰمَنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तरफ़ अपने रब के | हिजरत करने वाला हूं | बेशक मैं | और उसने कहा | लूत | उस पर | तो ईमान लाया |

| اِسْحٰقَ | لَهٗ | وَوَهَبْنَا | الْحَكِيْمُ ﴿26﴾ | الْعَزِيْزُ | هُوَ | اِنَّهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इसहाक़ | उसे | और अता कर दिया हमने | ख़ूब हिकमत वाला | बहुत ज़बरदस्त | वो ही है | बेशक वो |

| وَاٰتَيْنٰهُ | وَالْكِتٰبَ | النُّبُوَّةَ | فِيْ ذُرِّيَّتِهِ | وَجَعَلْنَا | وَيَعْقُوْبَ |
|---|---|---|---|---|---|
| और अता किया हमने उसे | और किताब | नुबूव्वत | उसकी औलाद में | और रख दी हमने | और याक़ूब |

| وَلُوْطًا | لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿27﴾ | فِي الْاٰخِرَةِ | وَاِنَّهٗ | فِي الدُّنْيَا ۚ | اَجْرَهٗ |
|---|---|---|---|---|---|
| और लूत को | अलबत्ता सालेह लोगों में से है | आख़िरत में | और बेशक वो | दुनिया में | अज्र उसका |

| سَبَقَكُمْ | مَا | الْفَاحِشَةَ ۡ | لَتَاْتُوْنَ | اِنَّكُمْ | لِقَوْمِهٖٓ | قَالَ | اِذْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सबक़त की तुम पर | नहीं | बेहयाई को | अलबत्ता तुम आते हो | बेशक तुम | अपनी क़ौम से | उसने कहा | जब |

| الرِّجَالَ | لَتَاْتُوْنَ | اَئِنَّكُمْ | مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿28﴾ | مِنْ اَحَدٍ | بِهَا |
|---|---|---|---|---|---|
| मर्दों को | अलबत्ता तुम आते हो | क्या बेशक तुम | तमाम जहान वालों में से | किसी एक ने | साथ इसके |

| كَانَ | فَمَا | الْمُنْكَرَ ؕ | فِيْ نَادِيْكُمُ | وَتَاْتُوْنَ | السَّبِيْلَ ۙ | وَتَقْطَعُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| था | तो ना | बुरे कामों को | अपनी मजलिसों में | और तुम आते हो | रास्ता | और तुम काटते हो |

وقف لازم

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | بِعَذَابِ | ائْتِنَا | قَالُوا | اَنْ | اِلَّآ | قَوْمِهٖٓ | جَوَابَ |
| अल्लाह का | अज़ाब | ले आ हम पर | उन्होंने कहा | ये कि | मगर | उसकी क़ौम का | जवाब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى | انْصُرْنِيْ | رَبِّ | قَالَ | مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿29﴾ | كُنْتَ | اِنْ |
| ऊपर | मदद फ़रमा मेरी | ऐ मेरे रब | कहा | सच्चों में से | है तू | अगर |

ع 3 8 15

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِبْرٰهِيْمَ | رُسُلُنَآ | جَآءَتْ | وَلَمَّا | الْمُفْسِدِيْنَ ﴿30﴾ ع | الْقَوْمِ |
| इब्राहीम के पास | हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | आए | और जब | जो मुफ़सिद हैं | उन लोगों के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْقَرْيَةِ ج | هٰذِهِ | اَهْلِ | مُهْلِكُوْٓا | اِنَّا | قَالُوْٓا | بِالْبُشْرٰى لا |
| बस्ती के | इस | रहने वालों को | हलाक करने वाले हैं | बेशक हम | उन्होंने कहा | खुशख़बरी लेकर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهَا | اِنَّ | قَالَ | ظٰلِمِيْنَ ﴿31﴾ ج | كَانُوْا | اَهْلَهَا | اِنَّ |
| इसमें | बेशक | इब्राहीम ने कहा | ज़ालिम | हैं वो | इसके रहने वाले | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنُنَجِّيَنَّهٗ | فِيْهَا وقفة | بِمَنْ | اَعْلَمُ | نَحْنُ | قَالُوْا | لُوْطًا ط |
| अलबत्ता हम ज़रूर निजात देंगे उसे | इसमें है | उसे जो | ज़्यादा जानते हैं | हम | उन्होंने कहा | लूत है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | وَلَمَّآ | مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿32﴾ | كَانَتْ | امْرَاَتَهٗ ق | اِلَّا | وَاَهْلَهٗٓ |
| ये कि | और जब | पीछे रहने वालों में से | है वो | उसकी बीवी के | सिवाए | और उसके घर वालों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهِمْ | وَضَاقَ | بِهِمْ | سِيْٓءَ | لُوْطًا | رُسُلُنَا | جَآءَتْ |
| उनसे | और वो तंग हुआ | उनसे | वो परेशान हुआ | लूत के पास | हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | आ गए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُنَجُّوْكَ | اِنَّا | تَحْزَنْ قف | وَلَا | لَا تَخَفْ | وَّقَالُوْا | ذَرْعًا |
| निजात देने वाले हैं तुझे | बेशक हम | तुम ग़म करो | और ना | ना तुम डरो | और उन्होंने कहा | दिल में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّا | مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿33﴾ | كَانَتْ | امْرَاَتَكَ | اِلَّآ | وَاَهْلَكَ |
| बेशक हम | पीछे रहने वालों में से | है वो | तेरी बीवी के | सिवाए | और तेरे घर वालों को |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُنْزِلُوْنَ | عَلٰٓى | اَهْلِ | هٰذِهِ | الْقَرْيَةِ | رِجْزًا | مِّنَ السَّمَآءِ |
| नाज़िल करने वाले हैं | ऊपर | रहने वालों के | इस | बस्ती के | एक अज़ाब | आसमान से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | كَانُوْا | يَفْسُقُوْنَ (34) | وَلَقَدْ | تَّرَكْنَا | مِنْهَآ | اٰيَةًۢ |
| बवजह उसके जो | थे वो | वो नाफ़रमानी करते | और अलबत्ता तहक़ीक़ | छोड़ दी हमने | इसमें | एक निशानी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بَيِّنَةً | لِّقَوْمٍ | يَّعْقِلُوْنَ (35) | وَاِلٰى | مَدْيَنَ | اَخَاهُمْ | شُعَيْبًا ۙ |
| खुली | उन लोगों के लिए | जो अक़्ल रखते हैं | और तरफ़ | मदयन के | उनके भाई | शुऐब को (भेजा) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَقَالَ | يٰقَوْمِ | اعْبُدُوا | اللّٰهَ | وَارْجُوا | الْيَوْمَ الْاٰخِرَ | وَلَا |
| तो उसने कहा | ऐ मेरी क़ौम | इबादत करो | अल्लाह की | और उम्मीद रखो | आख़िरी दिन की | और ना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَعْثَوْا | فِى الْاَرْضِ | مُفْسِدِيْنَ (36) | فَكَذَّبُوْهُ | فَاَخَذَتْهُمُ | الرَّجْفَةُ |
| तुम फ़साद करो | ज़मीन में | मुफ़सिद बन कर | तो उन्होंने झुठला दिया उसे | तो पकड़ लिया उन्हें | एक ज़लज़ले ने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاَصْبَحُوْا | فِىْ دَارِهِمْ | جٰثِمِيْنَ (37) ۙ | وَعَادًا | وَّثَمُوْدَاۡ | وَقَدْ |
| तो सुबह की उन्होंने | अपने घरों में | घुटनों के बल गिरने वाले | और आद | और समूद को (हलाक किया) | और तहक़ीक़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَّبَيَّنَ | لَكُمْ | مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ | وَزَيَّنَ | لَهُمُ | الشَّيْطٰنُ |
| वाज़ेह हो गई (हालत) | तुम पर | उनके घरों से | और मुज़य्यन कर दिए | उनके लिए | शैतान ने |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اَعْمَالَهُمْ | فَصَدَّهُمْ | عَنِ السَّبِيْلِ | وَكَانُوْا | مُسْتَبْصِرِيْنَ (38) ۙ |
| आमाल उनके | तो उसने रोक दिया उन्हें | रास्ते से | और थे वो | बहुत देखने वाले/समझदार |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَقَارُوْنَ | وَفِرْعَوْنَ | وَهَامٰنَ ۫ | وَلَقَدْ | جَآءَهُمْ | مُّوْسٰى |
| और क़ारून | और फ़िरऔन | और हामान | और अलबत्ता तहक़ीक़ | आए उनके पास | मूसा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| بِالْبَيِّنٰتِ | فَاسْتَكْبَرُوْا | فِى الْاَرْضِ | وَمَا | كَانُوْا | سٰبِقِيْنَ (39) ۚ |
| साथ वाज़ेह निशानियों के | तो उन्होंने तकब्बुर किया | ज़मीन में | और ना | थे वो | भाग जाने वाले (हमसे) |

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْهِ | اَرْسَلْنَا | مَّنْ | فَمِنْهُمْ | بِذَنْۢبِهٖ ۚ | اَخَذْنَا | فَكُلًّا |
| जिस पर | भेजी हमने | जो | तो उनमें से कोई है | बवजह उसके गुनाह के | पकड़ लिया हमने | तो हर एक को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّنْ | وَمِنْهُمْ | الصَّيْحَةُ ۚ | اَخَذَتْهُ | مَّنْ | وَمِنْهُمْ | حَاصِبًا ۚ |
| जो | और उनमें से कोई है | चिंघाड़ ने | पकड़ लिया उसको | जो | और उनमें से कोई है | पत्थरों की आंधी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | اَغْرَقْنَا ۚ | مَّنْ | وَمِنْهُمْ | الْاَرْضَ ۚ | بِهِ | خَسَفْنَا |
| और नहीं | ग़र्क़ कर दिया हमने | जिसे | और उनमें से कोई है | ज़मीन को | साथ उसके | धंसा दिया हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَظْلِمُوْنَ ﴿40﴾ | اَنْفُسَهُمْ | كَانُوْٓا | وَلٰكِنْ | لِيَظْلِمَهُمْ | اللّٰهُ | كَانَ |
| वो ज़ुल्म करते | अपनी ही जानों पर | थे वो | और लेकिन | कि वो ज़ुल्म करे उन पर | अल्लाह | है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كَمَثَلِ | اَوْلِيَآءَ | اللّٰهِ | مِنْ دُوْنِ | اتَّخَذُوْا | الَّذِيْنَ | مَثَلُ |
| मानिंद मिसाल | कुछ वली/दोस्त | अल्लाह के | सिवाए | बना लिए | उनकी जिन्होंने | मिसाल |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَبَيْتُ | الْبُيُوْتِ | اَوْهَنَ | وَاِنَّ | بَيْتًا ۖ | اِتَّخَذَتْ | الْعَنْكَبُوْتِ ۚ |
| अलबत्ता घर है | घरों में | सबसे कमज़ोर | और बेशक | एक घर | जिसने बना लिया | एक मकड़ी के है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَا | يَعْلَمُ | اللّٰهَ | اِنَّ | يَعْلَمُوْنَ ﴿41﴾ | كَانُوْا | لَوْ | الْعَنْكَبُوْتِ ۘ |
| जिसे | वो जानता है | अल्लाह | बेशक | वो इल्म रखते | होते वो | काश कि | मकड़ी का |

وقف لازم

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْحَكِيْمُ ﴿42﴾ | الْعَزِيْزُ | وَهُوَ | مِنْ شَيْءٍ ۖ | مِنْ دُوْنِهٖ | يَدْعُوْنَ |
| ख़ूब हिक्मत वाला | बहुत ज़बरदस्त | और वो ही है | किसी भी चीज़ को | उसके सिवा | वो पुकारते हैं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَعْقِلُهَآ | وَمَا | لِلنَّاسِ ۚ | نَضْرِبُهَا | الْاَمْثَالُ | وَتِلْكَ |
| समझते उन्हें | और नहीं | लोगों के लिए | हम बयान करते हैं उन्हें | मिसालें हैं | और ये |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَالْاَرْضَ | السَّمٰوٰتِ | اللّٰهُ | خَلَقَ | الْعٰلِمُوْنَ ﴿43﴾ | اِلَّا |
| और ज़मीन को | आसमानों | अल्लाह ने | पैदा किया | इल्म रखने वाले | मगर |

AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

ع 4 14 16

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| بِالْحَقِّ ؕ | اِنَّ | فِيْ ذٰلِكَ | لَاٰيَةً | لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿44﴾ ع |
| साथ हक़ के | यक़ीनन | इसमें | अलबत्ता एक निशानी है | ईमान लाने वालों के लिए |

AL HUDA INTE NATIONL WELFA E FOUNDATION